प्रथम अध्याय

शोध विषय का परिचय

१.१ प्रस्तावना :

धर्म इतना प्राचीन है की, धर्म विभिन्न विषयों के विचारवंतों और समाजसुधारकों के अध्ययन का विषय रहा है। हम धर्म का विचार मुख्यता समाजशास्त्रीय दृष्टीकोण से करते है। एखाद व्यक्ती ही निरीश्वर वादी हो सकती है। इसका मतलब ईश्वर और धर्म के अस्तित्व अमान्य करणेवाली व्यक्ती हो सकती है। परंतू ऐसे व्यक्तीओं की संख्या बहुत अल्प है। समाज के गहरे संदर्भ को देखा जाये तो समाज की निर्मीती से आजतक व्यक्ती-व्यक्ती मे परस्पर संबंध के स्वरूप निर्धारीत, नियमित और नियंत्रित करणे में धर्म का योगदान महत्वपुर्ण है, ये दिखाई देता है। इस संदर्भ मे **डॉ. किंगज्ले डेविस** ने कहा है, ‘‘**धर्म ये मानवी जीवन मे सार्वत्रीक, शास्वत तथा व्यापक है। धर्म के स्वरूप को ध्यान में लिये बिना समाज के यर्थार्थ स्वरूप का आकलन नही हो सकता**।’’ धर्म का सामाजिक जीवन से नजदीकी संबंध है और इसलिए समाजशास्त्र मे धर्म के अध्ययन को बहुत महत्व है।

भारत देश को हमेशा से धर्म और आध्यात्मिकता के रुप में सराहा गया है। दुनिया के सभी प्रमुख धर्मों में आपसी सम्मान और सहिष्णुता का माहौल सदियों से रहा है। इन्हीं वजहसें इन देशों का अस्तित्व कायम है। भारत इस संबंध में दुनिया के देशों के समुदाय में गर्व एवं प्रतिष्ठा के सर्वोत्मक चोटी पर जगह बना सका है। हालांकी सहिष्णुता और आपसी सम्मान के इस महान परंपरा का सन्तुलन अपने लम्बे इतिहास में अविभाजीत नहीं किया गया है। जब भी एक धर्म अन्य धर्मोपर श्रेष्ठता का दावा करता हैं, या अन्य धर्मों की निंदा करता हैं तो अकसर अंतर धार्मिय संघर्ष और सांप्रदायिकता के निर्माण के लिये अग्रणी होता है। इस का परिणाम गंभिर और दुरगामी दिखाई देता है। ऐतिहासिक सांप्रदायिक भडक और अंतर धार्मिक संघर्ष ज्यादातर क्षणिक घटना का असर होता है। समकालीन भारत अपने अतीत के इतिहास में एक अनसुने स्तर पर अंतर धार्मिक प्रतिद्वंदीता और संघर्ष के साक्षी है। ऐसे सभी संघर्ष स्थितीयों में, धार्मिक लोगों के हस्तक्षेप से प्रभावित सभी लोगों में धर्म की सच्ची भावना एकीकृत शक्ती के रुप में समझाने की जरुरत है। जिससे धार्मिक संतुलन बहाल किया जा सके और जीवन के प्रवाह को दिशा दे सके।

भारत के समकालीन स्थितीं में ईसाई मिशन की गतीविधीयों कि प्रकृती और सिमा की जांच करने का प्रस्ताव है। हिंदु सांप्रदायिकता और प्रती–सांप्रदायिकता, मिशनकी गतीविधीयों में अंतर धार्मिक टकराव का कारन है। भारतीय मुलनिवासी अछुतों को हिंदुओं ने उनके अधिकारों से हमेशा वंचित रखा है, जो की उनकी वर्तमान स्थिती में भी दिखाई देता है। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर द्वारा किये गये बौध्द धर्मांतरन से उनको अपने हक एवं अधिकार प्राप्त हुए है।

ईसाई धर्म में मानव सेवा ही ईश्वर सेवा मानी जाती है। ईसाई मिशनरीयों द्वारा किये जाने वाले धर्मांतरन में पिछले वर्ग के लोगों को, अछुतों को न्याय तथा समानता से देखा जाता है।

इसलिए इस विषय में शोध करना बहोत महत्वपुर्ण है। क्योंकी इस विषय में शोध करने से आने वाली पिढी को इस समाज का इतिहास समझ में आयेगा ताकी वह भी एक नया इतिहास बनाने में कामयाब होंगे। **डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकरजी** कहते थे, **‘‘जो समाज अपना इतिहास भुल जाता है, वह समाज कभी इतिहास नही बना सकता।’’** इसलिए इस विषय का महत्व समझकर मैंने अपने शोध विषय **‘‘ईसाई धर्म धारन करनेवाले व्यक्तियों की पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती : एक अध्ययन’’** **(विशेष संदर्भ : वर्धा तहसिल, जिला वर्धा, महाराष्ट्र)**

इस विषय का अध्ययन कर शोध करने का मेरा मन हुआ है। समिक्षात्मक अध्ययन के दृष्टीसे यह शोध कार्य किया जायेगा।

१.२ विषय साहित्य का पूनरावलोकन :

किसी कार्य को प्रारंभ करने से पहले तयारी की जरुरत पडती है। शोध कार्य हेतु पूर्व में किये गये शोध या संबंधीत साहित्यों का अध्ययन करना अत्यंत जरुरी होता है। जो की मेरे शोध का विषय है, ''ईसाई धर्म धारन करनेवाले व्यक्तियों की पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती का अध्ययन'' वर्धा तहसिल के विशेष संदर्भ में है। इस विषय की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुऐ मैंने पूर्व में किये गये शोध एवं विषय से संबंधीत किताबों, साहित्यों का अध्ययन किया जिसमें ईसाई धर्म के ऐतिहासीक पृष्ठभुमी, उनकी संस्कृती एवं ईसाई धर्मांतरनीत व्यक्तियों के पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितीयों के सदर्भ में जानकारी प्राप्त की है। इस अध्ययन के बगैर अन्य साहित्यों के वर्णन कुछ इस प्रकार है।

डॉ. डी. आर. जाटव ने अपनी किताब, ''डॉ. अम्बेडकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' इसमें बताया है की, पूर्व का अछुत समाज को धर्मांतरन के पहले चातुवर्ण व्यवस्था में किसी भी प्रकार के अधिकार

नही थे। उनके साथ पशुओं से भी बत्तर व्यवहार किया जाता था। लेकीन डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने इस समाज में परिवर्तन लाने के लिए आंदोलन किया तथा इस समाज को परिवर्तन की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया।

मॅथ्यु थॉमस ने अपनी किताब ‘‘भारत के बहुलवादी संदर्भ में ईसाई मिशनरीओं के दृष्टीकोन की प्रासंगिकता’’ इसमें बताया है की, आदिवासी पिछडा वर्ग तथा पूर्व का अछुत समाज को ईसाई मिशनरीयों द्वारा किये गये धर्मांतरन के बाद उनमें जनजागृती तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोन, अच्छी शिक्षा की ओर ले जा रहा है।

ईसाई मिशनरीयों द्वारा किया जानेवाला धर्मांतरन भारत की बहुलवादी पहचान को खतरे में डाल रहा है, ऐसा हिन्दु उग्रपंथीयों का आरोप है। हिन्दु उग्रपंथीय नेता लोग भारत से सभी विदेशी मिशनरीयों पर कानुनी प्रतिबंध लगाने के लिए बहस कर रहा है। इस आलोचनाओं के प्रकाश में वर्तमान अध्ययन एक सामान्य सर्वेक्षण और एक दृष्य में भारत में ईसाई मिशन की गतिविधीयों का विश्लेषन करने के लिए तयार किया गया है।

निष्कर्षतः ईसाई मिशनरीयों के प्रयासों से ही ईसाई धर्मांतरीत लोगों में पारिवारीक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक परिवर्तन आया है।

१.३ शोध का उद्देश्य :

वर्तमान दौर में धर्म रुपांतरन एक क्रांती के रुप में उभरकर आता नजर आता है। वास्तव में देखा जाये तो धर्म रुपांतरन सर्व समाज को प्रभावित करता है। मेरे शोध का विषय ईसाई धर्म धारन करनेवाले व्यक्तियों की पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती का अध्ययन वर्धा तहसिल के विशेष संदर्भ में है। अतः धर्मांतरीत व्यक्तियों की पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती को ध्यान में रखते हूऐ परिवर्तीत हो रहे समाज के वर्तमान स्थिती का अध्ययन करने सें धर्मांतरन किस हद तक सकारात्मक एवं नकारात्मक सामाजिक बदलाव लाता है इन सब का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो रहा है।

अध्ययन का प्रमुख उददेश निम्नांकित है –

१. धर्मांतरण से पहले की ईसाई धर्म धारण करणेवाले व्यक्तिंयों की सामाजिक स्थिती का अध्ययन करना ।

२. धर्मांतरण के बाद धर्मांतरीत व्यक्तिंयों के सामाजिक स्थिती पर धर्मांतरण का क्या प्रभाव पडा इसका अध्ययन करना।

३. धर्मांतरीत समाज के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में ईसाई मिशनरींयों का क्या योगदान है इसका अध्ययन करना।

४. वर्तमान समय में ईसाई धर्मांतरीत व्यक्तियों की स्थिती कैसी है इसका अध्ययन करना।

५. वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत व्यक्तियों की पहले की क्या स्थिती थी तथा धर्मांतरन के बाद क्या स्थिती है इसका तुलनात्मक अध्ययन करना।

१.४ शोध कि परिकल्पना :

१. ईसाई धर्म धारन करने वाले व्यक्तियों की पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती का समाज परिवर्तन में योगदान रहा है।

२. धर्मांतरण के बाद धर्मांतरीत व्यक्तियों में नई चेतना पैदा हुई है। जिसके कारण धर्मांतरीत लोगों कें आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक स्थिती में बहूत बडा परिवर्तन आया है।

३. ईसाइ धर्मांतरीत व्यक्तियों में वैज्ञानिक दृष्टि पैदा हुई है ।

४. ईसाई मिशनरीयों व्दारा किया गया कार्य विश्वबंधुत्व कें लियें एक आदर्श साबीत हुआ है।

५. वर्धा तहसिल के ईसाइ धर्म धारण करणेवाले लोगों पर इस धर्म का इतना प्रभाव पडा कि उनके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक स्थिती में बहुत बडा बदलाव आया है। इतना ही नही ंतो उनके रहन-सहन तथा विचार करने की मनोवृत्ति में भी धर्मांतरण के बाद बडा बदलाव नजर आता है।

१.५ शोध प्रविधी :-

अध्ययन में प्रयुक्त शोध प्रविधी :

शोध कर्ता अपने क्षेत्र से आंकडा संकलन करने के साथ ही क्षेत्र कार्य के अध्ययन करने के लिऐ विभिन्न शोध प्रविधीयों का उपयोग करता है। मूझे मेरे क्षेत्र कार्य के लिऐ ३० दिन का समय १५ फरवरी से १५ मार्च २०१३ तक मिला था। इस ३० दिनों में मैंने १५ फरवरी से २० फरवरी तक अर्थात ५ दिन तक वर्धा जिले के तहसील गावं का पाइलट सर्वे (पुर्वावलोकन) किया। अपने विषय के अनुरुप बनाऐ गये अनुसूची को वहां के ईसाई धर्मांतरनीत व्यक्तियों से जांचा गया। फिर ईसाई धर्मांतरनीत व्यक्तियों के आमने-सामने होकर विषय संबंधी चर्चाऐं भी की। इसके बाद बनाऐ गये अनुसूची के प्रश्नों में सुधार किया जिससें मेरा अध्ययन कार्य पूर्ण एवं बेहतर हो सके।

मैंने २५ फरवरी २०१३ को पुनः अपने अध्ययन क्षेत्र में पहुँच कर क्षेत्र कार्य सुरु कर दिया। अपने शोध विषय के अनुरुप आंकडे संकलन करने के लिऐ विभिन्न शोध प्रविधीयों का प्रयोग किया।

मैंने अपने शोधकार्य में गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों शोध प्रविधी का प्रयोग किया है। मेरा शोध विषय ईसाई धर्म धारन करने वाले

व्यक्तियों की पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती का अध्ययन वर्धा तहसिल के विशेष संदर्भ में होने से वर्धा जिला के अंतर्गत सभी तहसीलों का बहुत गहन अध्ययन करना पडा है। साथ ही शोध को उपयोगी बनाने के लिऐ दोनों शोध प्रविधीयों का प्रयोग में लाना अनिवार्य था।

अ) प्राथमिक स्त्रोत :

प्राथमिक स्त्रोत वे स्त्रोत है, जिसके द्वारा प्राथमिक आंकडे स्वंय शोधकर्ता सबसे पहले एक विशेष उददेश्य के लिऐ संकलीत करता है। इसलिऐ मैंने अपने अनुसंधानमें प्राथमिक के अंतर्गत गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों प्रविधीयों का इस्तेमाल किया है। आजकल इस प्रविधीकों त्रिभुजन कहॉ जाता है क्योंकी दोनों प्रविधी इसमें शामिल है इसमें सूचनाओंकी विश्वसनियता की भी जांच हो जाती है। इस तरह गुणात्मक एवं गणनात्मक प्रविधी के अंतर्गत निम्न तकनिक उपयोग में लाये गये है।

❖ निदर्शन :

निदर्शन समग्रका छोटा भाग या अंश है, जो की समग्र का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें समग्र की मौखीक विशेषताऍं पाई जाती है।

अतः निदर्शन व पध्दति है, जिसके द्वारा केवल समग्र के एक अंश का निरीक्षण करके संपूर्ण समग्र के बारे में जाना जा सकता है। गूडे एवं हैट के मतानुसार एक निदर्शन नामसें स्पष्ट है किसी विस्तृत समूह का एक अपेक्षाकृत लघु प्रतिनिधी है।

इस प्रकार मैंने अपने अध्ययन में उददेशपूर्ण निदर्शन प्रणाली का प्रयोग किया है। इसमें मैंने उददेश्यपूर्ण एवं इच्छानुसार इकाइयों का चूनाव कर गावों का चयन किया है। इसमें समय, श्रम एवं धन की भी बचत हुई। वर्धा जिले के ७ तालुकों में से २ तालुके का चयन किया है। जिसमें २ तालुके के ५० परिवारों का चयन शोधप्रबंध में किया है।

➢ **गणनात्मक प्रविधी :**

इस पध्दतीमें संख्याओं एवं मापों कों महत्व दिया जाता है। इसके अंतर्गत निम्न तकनिक का उपयोग किया जाता है :-

❖ **साक्षात्कार अनुसूची :**

इसमें प्रश्नों को पहलेही तैयार कर लिया जाता है, जिसे शोधकर्ता प्रत्यक्ष रुप से संपर्क स्थापित करके औपचारीक साक्षात्कार द्वारा प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करके वह स्वयं उनके उत्तर को भरता है। इसी

प्रकार मैंने साक्षात्कात अनुसूची का प्रयोग कर विषय संबंधीत प्रश्नों के उत्तर एवं विचार ईसाई धर्म धारन करनेवाले व्यक्तियों के घर-घर जाकर सीधे जानकारी प्राप्त कर ५० परिवारों के सदस्यों से प्रश्न पूछकर अनुसूची को भरा है।

➢ **गुणात्मक प्रविधी :**

गुणात्मक प्रविधी में गुणों को महत्व दिया जाता है, संख्याओं को नहीं। इसमें अध्ययन इकाइयों का वर्णन किया जाता है। अर्थात केवल विवरन प्रस्तुत किया जाता है। मैंने अपने संख्यात्मक आंकडों की सत्यापन के लिए गुणात्मक प्रविधी का प्रयोग किया है।

❖ **वैयक्तिक अध्ययन :**

अध्ययन को मौलिक रुपमें प्रस्तुत करने के लिऐ तथा ईसाई धर्म धारन करनेवाले व्यक्तियों में विभिन्न प्रभावों का महत्तम तथा सूक्ष्म अध्ययन के लिए मैंने अपने प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन में वैयक्तिक अध्ययन शोध प्रविधी का शामिल किया है। इस विधी से ईसाई धर्म धारन करनेवाले व्यक्तियोंको विभिन्न पहलुओं से गंभीरता पूर्वक गहन अध्ययन कर तथ्यों को प्राप्त किया है जैसे - ईसाई धर्म धारन करनेवाले व्यक्तियों एवं परिवारों का सांस्कृतीक मुल्य, धर्म, संस्कृति तथा पारिवारीक, सामाजिक, आर्थिक स्थिती में परिवर्तन किस दिशा में हो

रहा है। मैंने अपने शोध अध्ययन में मूल रुप से वैयक्तिक अध्ययन शोध प्रविधी का उपयोग किया ताकि नया धर्मधारीत व्यक्तियों एवं परिवारों में संस्कृति व विकास में परिवर्तन का आकृष्ट आंकडा प्रस्तुत कर सकूं।

❖ साक्षात्कार :

''साक्षात्कार'' अनुसंधान में आंकडे संकलन करने कि एक प्राचीन एवं बहुचर्चित प्रविधी है। समाजशास्त्र में यह सर्वाधिक प्रचलित एवं सर्वोपरि प्रविधी मानी गई है। इसमें सूचनादाता के समक्ष बैठकर शोधकर्ता वार्तालाप करके उनके मनोभावों, मनोवृत्तियों, विचारसंबंधी विषय कि जानकारीयॉं प्राप्त करते है। इसमें शोधकर्ता सूचनादाता के आंतरिक एवं बाहरी जीवन का अध्ययन करता है।

मैंने अध्ययन क्षेत्र में ईसाई धर्मधारीत व्यक्तियों की पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती की समस्त जानकारी एकत्रित की। यह प्रविधी मेरे शोधकार्य में अत्यंत कारगर साबित हुई है।

❖ अवलोकन :

अवलोकन अनुसंधान की एक विधी है, इसका प्रयोग सामाजिक व्यवहार, घटनाओं एवं परिस्थितीयों के अध्ययन के लिऐ किया जाता है। जिन्हें हम अपने आंखों से देख सकते है। यह एक विश्वसनिय प्रविधी है, इसमें शोधकर्ता स्वंय प्रत्यक्ष रुप से देखता है। मैंने अपने अनुसंधान में आंकडे एकत्र करने के लिऐ अर्ध्द सहभागी अवलोकन का प्रयोग किया है। क्योंकी कम समय में सहभागी अवलोकन संभव नही है।

❖ छायाचित्रण :

मैंने अपने शोधकार्य को बेहतर एवं प्रभावित बनाने के लिऐ ईसाई धर्मधारन करनेवाले व्यक्तियों एवं परिवारों के सामाजिक, पारिवारीक एवं आर्थिक स्थिती को दर्शानेवाले चित्रों के माध्यम से संरचित किया है।

ब) द्वितीयक स्त्रोत :

द्वितीयक स्त्रोत वे सूचनाएँ व आंकडे है, जो अनुसंधानकर्ता को प्रकाशित व अप्रकाशित रिपोर्ट, सांख्याकी, पाण्डुलिपी, पत्र–डायरी, टेप, वीडीयो कैसेट, इंटरनेट से प्राप्त होते है। मैंने विषय से संबंधीत द्वितीयक स्त्रोत के रुप में लघुशोध प्रबंध, सरकारी रिपोर्ट, लिखीत पुस्तकों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन कर तथ्य संकलित किया है। जो कि मेरे शोध में काम आया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

''ईसाई धर्म धारन करने वाले व्यक्तियों की परिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती : एक अध्ययन'' (विशेष संदर्भ : वर्धा तहसिल, जिला वर्धा, महाराष्ट्र) इस शोध विषय को पूरा करने हेतु इस शोध विषय से सम्बन्धित पुस्तके, पत्र-पत्रिकाएँ, जर्नल्स, समाचार पत्र इत्यादि का संदर्भ ग्रंथ के रुप में चयन किया गया।

द्वितीय अध्याय

धर्म का समाजशास्त्रीय अर्थ एवं परिभाषा

धर्म का अध्ययन विभिन्न शास्त्रों के व्दारा किये जाता है एवं समाज सुधारकोंद्वारा किया जाता है। धर्मशास्त्र ये भी एक ज्ञान शाखा है। इसलिये धर्म का एकमात्र अर्थ कोणसा ये धूंड निकालना सभीके लिये जरूरी होता है। धर्म का समाजशास्त्रीय अर्थ एकमात्र कोणसा है? ऐसा प्रश्न सभी लोगोंको निर्माण होता है। धर्म का समाजशास्त्रीय अर्थ ध्यान में लेते समय पहिले तो धर्म के संस्थापक को ध्यान मे लिया जाता है। धर्म के संस्थापक को नियुक्त करणे का समाजशास्त्रीय दृष्टीकोण अन्य शास्त्रसे अलग है। ये ध्यान में रखना जरूरी है। धर्म के वस्तूनिष्ठ अध्ययनमें समाजशास्त्र को कोई दिलचस्पी नही लेकीन अध्ययन के महत्वके अनुसार धर्म के बारे में धर्म के सही गलत रस को देखना जरूरी है।

विभिन्न सामाजिक विचारवंतोने धर्मकी संकल्पनाको अपने विचारों के आधार स्पष्ट किया है। उन विचारोमेंसे महत्वपुर्ण घटक निचे दिये गये है।

१. कुछ वस्तु व व्यक्ती पवित्र वस्तुके संदर्भ मे पुजाविधी करते है। इससे धर्मश्रध्दा व्यक्त होती है।

२. समान धर्म श्रध्दा और धर्मविधी करनेवाले समुदाय मे धर्महीसामाजीक घटना समझी जाती है और वैयक्तीक स्वरूपोंकी अनुभूतीभी ऐसीही होती है।

३. धर्म ये श्रध्दा और विधी इनका मिलाप है। श्रध्दा और धर्म परस्पर सहयोगी है।

४. सामाजिक वर्तनोंकी विभिन्न पध्दती, विधी या त्यौहार इत्यादीओं ने धर्म को आधार दिया है।

२.१ धर्म की व्याख्या :

एडवर्ड टायलर्ट ने कहा है ''दैवी विभूतोंके अस्तित्व को मानना ही धर्म है।'' अति प्राचीन काल से आदी-मानवों ने जनम-मरन, ख्वाब इत्यादी घटनाओं का अर्थ लगाने का प्रयास किया है। इन प्रयासों से रूह की कल्पना ध्यान मे आई। ये सभी रूहे बहुत शक्तीशाली होती है। और वही रूहे जिंदगीके सभी घटनाओं को नियंत्रीत करते है।

२.२ धर्मांतरन का अर्थ :

धार्मिक रुपांतरण मुख्य रुप से किसी विशिष्ट धर्म में विश्वास रख कर परिवर्तन को संदर्भीत करता है। सामाजिक, राजनीतिक जैसे ऐतिहासीक धाराओं की प्रक्रिया को जाने बिना रुपांतरण का अर्थ आमतौर पर किसी के ध्यान में नही आता। धार्मिक रुपांतरण हमेशा विवाद का विषय बना है। यह समाज के मौजूदा चुनौती के रुप में माना जाता है। धर्म रुपांतरण एक निजी मामला होकर व्यक्तिपरक घटना, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष समाज एवं व्यक्तिकी भागीदारी इसमें निहीत होती है। ज्यादातर मामलों में धार्मिक रुपांतरण समाज के राजनीतिक और नैतिक संतुलन में परिशानी अंततः एक क्रांतीकारी बदलाव की ओर ले जाता है।

धार्मिक रुपांतरण हमेशा हिंसा, विरोध व विद्रोह के साथ जुडा हुआ है। राष्ट्रीयता की पहचान धार्मिक रुपांतरण के साथ प्रभावित होती है। विदेशी एजेंसीयों को हमेशा राष्ट्रीय एकता और लोकप्रिय राष्ट्रवादी विचारधारा के लिऐ खतरा है, इस तरह के आरोप का सामना करना पडता है।

२.३ धर्मांतरन की क्रांती :

धर्मांतरन करणे का हक मिले बिना समाज का उध्दार नही हो सकता इस बात को समजकर **डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरने** राज्यघटनामें धर्मांतरन के बारेमें बताते हुये कहा है की, **''अगर किसी आदमी को उसके इच्छानुसार धर्मांतरन करनेका हक राज्य घटनामें ना हो तो वो राज्यघटना किस काम की।"** इसी संदर्भमे आस्ट्रेलियन मिशनरी ग्रॅहम स्टेन्स इन्होने अपने दोनो बच्चोंको जानवरी १९९९ मे जलाकर मारा इसलीये की, उसके बच्चे धर्मांतरन को लेकर प्रभावित हुये थे। और धर्मांतरन के बारे क्रांती होने की संभावना थी। इस प्रकार के विचार धर्मांतरन के विरोधी लोगोंमे जल रही थी।

इस प्रकार येशू ख्रिस्तने समाज मे गरीबोंको सहायता करणेका काम शुरू कीया अपने काम से बहुत से शिष्य प्रभावित होकर येशू के साथ उनके कार्यमे हात बटाने में जुट गये। लेकिन इनमेंसे कुछ शिष्य अपने सामाजिक प्रतिष्ठाके लिये समाज कार्य करते थे और कुछ लोग अपने खूद के फायदे के लिये ये सब कर रहे थे। लेकिन येशूने समाजमे फैले गरिब लोगोंकी सेवा करने के पीछे कोई मक्सद नही होना चाहीये ऐसी सोच समाज को दी गई। इन सब कार्य के बारे मे सोच विचार करे तो ये दिखाई देता है की, स्वार्थ रख कर कार्य करना या प्रतिष्ठा के लिए कार्य करनायह ख्रिश्चन धर्म की सही सोच नही है।

लेकीन इसका हिंदू धर्म के लोगोंपर कुछ अलग ही प्रभाव पडा उनको लगता था की, ऐसी सेवा करनेसे धर्मांतरन के बारे मे लोक सोचने लगेंगे और ये सब बाते हिंदू धर्म के अहित मे थी।

२.४ धर्म एवं समाज की एकात्मता :

धर्मांतरन के सकारात्मक और नकारात्मक दो पहलू है। इनमें कही श्रध्दा, मुल्य और परंपराओं का त्याग करना पडता है। किंतु धर्मान्तर याने अपने परिवार का त्याग करणा नही। वर्तमान समाज में धर्म के लिये सभि चिजोंका त्याग करना पडता है। प्रभू येशू ख्रिस्त येहूदी धर्म के थे और येहूदी मंदीर मे उपासना करते रहे।

इससे ही पुरानमतवादी राष्टीय हूकुमशाही नाजीवाद और समाजवाद ऐसी घटना दिखाई देती है। स्वातंत्र और पुरानमतवादी राष्टीय हुकुमशाही तीन महत्वपुर्ण पुस्तकोमें भगवान नही इस बात पर विचारवंतोने विवेचन करते हुये कहा की, सर्व मानवधर्म निर्माण करणेवालो के विचार बहुत सरल और प्रकाशमय होते है। भगवान अस्तीत्वमे नही होणे के सर्व मुल्य जन्मसे ही अच्छी या बुरी न्यायी अथवा अन्यायी नही होती। अच्छा बुरा इसकी जान करणेवाली सदविवेक बुध्दी अध्यात्मिक तत्वज्ञान से प्राप्त होती है। यातो इससेही बुरी याने

यहुदी और ख्रिस्ती लोगोंने निर्माण की हुयी, फसाने का एक साधन है, ऐसा माना जायेंगा।

जब ऐखाद जागतीक दृष्टीकोण प्रतिकार करता है तब उसको सदसदविवेक बुध्दीसे आदमीाके मिले हुये वैयक्तीक आजादी निकाल लेना जरूरी है। प्रो. विईथ इन्होनें दिखा दिया है की, धर्मांतरन को विरोध करणेवाले भारत में जानबुझकर यही करणा चाहते आजादी न्यायत्व और सदसदविवेक बुध्दी इन सभी आध्यात्मिक संकल्पना है। इन सभी बातोंको जो आदमी आकलन करता है वो अपनी शक्तीओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। भगवान ने आदमी और औरत ऐसी दो भिन्न लिंग की निर्मीती की है। उसमें। निर्माण करणे वालोंके सृजनशीलताकी अजादी दिखाई देती है। इतनाही नही तो कोई भी जरूरी मुल्य ठहरानेकी ताकत और आजादी इनकाभी उसमे अंतरभाव है।

२.५ धर्मांतरन को बढावा देने वाली घटनाऐं :

एक कल्लू नाम का बकरीया चरानेवाला आदमी था। उसको पैर मे एक जखम हुई थी। जिसका इलाज करणा जरूरी था इसलीये कल्लू डॉक्टर के पास गया लेकिन डॉक्टर ने उसका ईलाज तो कीया मगर सही तऱ्हसे उसका इलाज न करनेकी वजहसे उसकी जखम और बढ

गई। डॉक्टरने कल्लूका इलाज कीया लेकिन कल्लू निछले जाती का होनेकी वजहसे डॉक्टरने उसकी जखम साफ नही की और उसी वजहसे डॉक्टरने दिया हुवा मरहम ठिक से काम नही करता था। और एक दिन उसकी जखन इतनी बढ गई की, उसे अपना काम भी करना नही होता था इसलीये उसे काम से निकाला गया।

घरके लोग कल्लूसे बहुत प्यार करते थे। लेकिन कल्लू नाम के सफेद हाती को संभालना उसकी देखभाल करना उन गरीबोंके लिए बहुत कठीन था। इसलिये न चाहते हुये भि उसके घरवालोने उसे रास्ते पे छोड दिया।

ये सब उसे मौत के मुंहमे ले जा रहे है। इसकी वजह एक ही है की वो निछले जात का है।

इसी अवस्थामे कोई मदर टेरिसा या ग्रॅहम स्टेन्स आती है और कल्लूका दर्द बाटती है। और सोचती है की, धरतीपे ऐसा भी कोई परिवार है जो दुख दर्दमे अपनेही परिवार के आदमी को रस्ते पे अकेला मरने के लिये छोड देते है। वो महीला जो कल्लूके लिये मदर टेरिसा बनके आयी उसने कल्लू की जखन अपने हातोंसे धोके उसका सही इलाज कीया इतनाही नही तो विदेशी लोगोंसे कल्लू के इलाज के लिये भिक मांगी।

इन सब बातोसे उस महीलाने ये संदेश दिया है की, हम खूदपे जैसा प्यार करते है वैसाही अपने पडोसीओंपर प्यार करे। यही सब बाते धर्मांतरन के क्रांती के लिये पोषक ठरती है। दुनियामे फैले बुरायीयोपे विजय प्राप्त करनेके लिये तथा उच्च निच्चता, अस्पृश्यता को समाजसे मिटाने के लिये समाजके लोगोंकी आखोपे बंधी पट्टीया खोलना जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ

१. प्रो. डॉ. कारुण्यकारा एल., अध्यक्षीय भाषण पवित्र दलित परिवार पहली नॅशनल कॉन्फरन्स, १४-१५ अक्टूबर २०१०, नागपूर.

२. डॉ. जाटव डि. आर., विश्व धर्म और अम्बेडकर.

३. सामाजिक समाचार पत्रिका., आदिवासी सत्ता.

४. *A Ministry of Christian Writing*., The Light of Life :The Magazine for Christian Growth.

५. अप्रकाशित लेख : दलितोध्दार में ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान, गजभिए संजय, नागपूर

तृतिय अध्याय

ईसाई मिशनोंकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

३१ दिसम्बर, १६०० इ. में 'दि गर्वनर एण्ड कम्पनी ऑफ मरचेण्टस् ऑफ लन्दन ट्रेडिंग इन्टू दि ईस्ट इंडीज' के नाम से ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना हुई। इस कम्पनी के भागीदारों की संख्या २१७ थी। इसमें टामस स्माइथ (प्रथम गर्वनर) के अतिरिक्त २४ अन्य समिति के सदस्य थे। साम्राज्ञी एलिजाबेथ के इस चार्टर द्वारा लन्दन की कम्पनी को यात्रा करने तथा स्वतन्त्रतापूर्वक व्यापार करने की सुविधा के साथ कम्पनी को १५ वर्ष तक भारत के साथ व्यापार करने का एकाधिकार भी मिल गया।

सन १६०८ में ईस्ट इंडियां कंपनी ने भारत के सूरत शहर में अपनी पहली कंपनी खोलकर पदार्पण किया। सन १६११ में इस कंपनी द्वारा दक्षिण भारत के मछलीपटटनम् में कंपनी स्थापित की गई। इस कंपनी के अंग्रज अधिकारीयों ने अपने गतिविधियों का प्रथम केन्द्र मद्रास (चेन्नई) को बनाया, जिसके लिए इन्हें १६३९ में स्थानिक राजा से भूमी प्राप्त हुई थी। इसके बाद इन्होंने सूरत को भी अपना मुख्यालय बना लिया। सन् १६३९ में कंपनी ने उडीसा में प्रवेश किया, तथा १६५१ में

उन्हें बंगाल के हुगली नगर में वयापार करने की अनुमती प्राप्त हो गई। इसके बाद कंपनी ने पटना, बालासोट, ढाका और बिहार तथा बंगाल के अन्य स्थानों पर भी कंपनीयाँ खोल दी। ईस्ट इंडिया कंपनी का मूल उददेश्य व्यापार करना था, किन्तु भारतीय राजा–महाराजाओं, छोटे–छोटे सामन्तों तथा शासकों की कमजोर एवं बिखरी हुई स्थितीयों को देखते हुए, अंग्रेज लोग भारत में अपनी राजनीतिक सत्ता स्थापित करने में जूट गए। सन् १६८६ में अंग्रेजों ने हुगली को नष्ट कर दिया और मुगल सम्राट के विरुध्द युध्द की घोषणा कर दी। सन् १६९८ में कई स्थानों में उन्होंने जमींदारी हासिल कर ली। तत्पश्चात अंग्रेज अपनी राजनीतिक गतिविधीयों में चालाकी से संलग्न रहे। सन् १७५७ के 'प्लासी युध्द' के साथ ही भारत में ब्रिटीश राजनीतिक सत्ता प्रारंभ हो गई। इसके बाद अंग्रजों ने इस देश के राजा–महाराजाओं, नवाबों, बादशाहों के साथ, विविध प्रकार की चालें चलीं, उनके साथ युध्द किए और सुलहनामें एवं संधियाँ भी की।

इसका दूरगामी परिणाम यह हुआ की भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के स्थान पर ब्रिटीश साम्राज्य का शासन प्रारंभ हो गया। जिलसके अंतर्गत भारत के 'सेक्रेटरी ऑफ स्टेट', भारत मंत्री द्वारा लन्दन से शासन किया जाता था।

किसी भी धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए स्थान के साथ-साथ प्रचार-प्रसार के अनुकुल वातावरण का भी होनो जरुरी होता है। भारत में ब्रिटीशों की सत्ता प्रस्थापित होने के बाद ईसाई धर्मप्रचारकों को भारत में ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए स्थान के साथ-साथ प्रचार-प्रसार का वातावरण भी मिल गया। क्योंकि ईसाई धर्मप्रचारक अपने धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए जब भारत आए उस समय भारतीय जनता पांच वर्णो यथा ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र एवं दलित (अछूत) में बटी हुई थी। इन वर्णो को असंख्य जाति और उपजातियों मे विभाजित किया गया था। इस समय दलितों (अछूतों) की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक और राजनैतिक अवस्था बहुत ही निम्न स्तर की थी। ऐसा कहने में भी कोई आपत्ती नहीं होनी चाहिए कि दलितों की अवस्था इस समय पशुओं से भी बदत्तर थी।

कोई भी धम्मप्रचारक अपने प्रचार-प्रसार के माध्यम से व्यक्ति या लोागों को अपनी ओर आकृष्ट करके उसे इस बात का पक्का विश्वास दिलाता है कि किस प्रकार से उस धम्मप्रचारक का धर्म अन्य धर्मों से सर्वोत्तम है। ऐसे धर्म को अपनाकर किस प्रकार से कोई भी व्यक्ति अपनी उन्नती कर सकता है। जब किसी व्यक्ति या लोगों के समूह को इस बात का पक्का विश्वास हो जाता है कि उसके वर्तमान धर्म से

अपनाया जानेवाला धर्म उसके लिए अधिक लाभदायक है तो वह व्यक्ति अपना धर्म परिवर्तन करने के लिए सहज ही तैयार हो जाता है। दलितों के साथ भी यहीं हुआ।

३.१ ईसाई मिशन : एक परिचय

ब्रिटीश सहकार में भारत में तीन भुमिकाएं की, पहली व्यापारी, दुसरी शासक और तीसरी ईसाई प्रचारक. ब्रिटीश शासन में ईसाई वर्चस्व पर्याय माना जाता था। प्रारंभिक वर्षों में कंपनी ने धार्मिक विषयक और सामाजिक मामलो के संबंध में तटस्थता स्थिती ली। ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए मिशनरी कार्य का समर्थन करने का लोगों ने फैसला किया। कंपनी की नीति भारतीय शिक्षा के क्षेत्रों में हस्तक्षेप करना थी।

मिशनरी और भारतीय समाज का मानना है की भारतीय आदिम धार्मिक लोगों का ईसाई धर्म अपनाने के लिए तैयार हो गया था यह कहना १६ वीं सदी में प्रोटेस्टेंट की पृष्ठभुमि के खिलाफ समझा जा सकता है। मिशनरी भारतीय सांस्कृतिक विविधता की जटीलताओं को समझने के लिए तैयार नही थी। उनमें युरोपीय सभ्यता के श्रेष्ठता की भावना थी। ईसाई मिशनरी के औपनिवेशिक प्रशासकों का कहना था कि,

हिंदू धर्म जल्द ही खत्म हो जाएगा और पूरे देश में ईसाई सभ्यता का निर्माण किया जा सकता है। अंग्रेजी शिक्षा इस लक्ष्य की दिशा में एक साधन के रूप में आयी थी। भारतीय सुविधा, व्यापार एवं मुल निवासीयोंको बेहतर बनाने के दिशा में ईसाई धर्म के ज्ञान के प्रसार के द्वारा एक सांस्कृतिक क्रांति लाई जा सकती है। **आर्थर मेहयु** के नजरसे ''अंग्रेजी मिशन के इंजिल समर्थको को कही अधिक भारत के सामान्य जानकारी के लिए किसी भी मात्रा में बाइबिल व बाप्टीझम के आंकडे प्रसार में रुची रखते है''। भारत के प्राथमिक हित के लिए और भारत पर नियंत्रन रखने के लिए ईसाई धर्म का प्रसार किया गया था। लेकीन औपनिवेशिक स्थिती में वे खुद को एक दुसरे कि जरुरत में पाया गया और इसलिए आपसी सहयोग बढता गया।

भारत में ईसाई मिशन का इतिहास बहुत प्राचिन है। भारत में ईसाई धर्म के मुल पर प्रकाश डालनेसे पहिले, देश में पोर्तुगाली और प्राटेस्टेंट मिशन के आगमन और उनके लिए भारत में ईसाई धर्म का प्रसार एवं प्रचार का एजेंडा संक्षिप्त में जानना अनिवार्य है। ईसाई धर्म के मूल को जानने हेतु भारत के विद्वानोंने कई मतभेद दिखाई देते है। किंतु ईसाई धर्म के मूल को विद्ववानोके दो विचारोसे जाना जा सकता है। एक के अनुसार, **सेंट थॉमस इन्हें येशू के बारह प्ररितो के द्वारा**

भारत में ईसाई चर्च की निव्ह रखने हेतू भेजा गया था। अन्य दृष्य में ईसाई व्यापारीयों और मिशनरीयों को पूर्व सिरीया और फारशी चर्चो से संबंधीत उदयम के लिए ईसाई धर्म के आगमन का कारण बताना होगा। लेकीन यह व्यापक रुप से माना गया है की, भारत में काम के क्षेत्र में सेंट थॉमस को सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है।

कार्डीनल का कहना है की, ''मुख्य रुप से दक्षिण भारत में सेंट थॉमस द्वारा किया गया कार्य बहुत प्राचिन है। ईसाई यूग की भोर में व्यापारी मार्गो को जोडनेवाले पश्चिम एशिया और पूर्वी देश थे। इसी वजह से ईसाई धर्म उत्तर भारत के कुछ हिस्सोपर भूमि मार्गो से और केरल और दक्षिण भारत के अन्य भागों के तट पर सागरी मार्गो से पहूचा था। भारत के लिए एक आसान मार्ग खोजने के प्रेरणा सेही ईसाई धर्म का मार्ग प्रशस्त हुआ। यहुदी बस्तीयों और मालावार के साथ व्यापारी संपर्क के आकर्षण से मिशनरीयों का सफर सुरु हुआ।

३.२ ईसाई मिशन की विशेषताऐं एवं प्रभाव :

ईसाई मिशनरों की मुख्य गतविधीयों का उददेश हर लोगों के समुह के बिच ईसाई धर्म का प्रचार एवं प्रसार को सक्रियता का रुप

प्रदान करना है। दुनिया के लोगों को इसमें शामिल कर उनकों मानवता के प्रति प्ररित करना तथा सुसमाचार पेश करके एक चर्च संयंत्रना का निर्माण करना है। भारत में ५१ मिशनरीयों पर आधारित समुह के बीच काम करना है। भारत में ईसाई मिशनरीयों द्वारा व्यक्तिगत इंजिलवाद और चर्चारोपन, बायबल अनुवाद, साक्षरता कार्यक्रम, स्वास्त देखबाल, सामुदायिक विकास, बालविकास, अस्पृष्यता निवारन, अंधश्रध्दा निवारन, कानुनी उपाययोजना, सामाजिक सुधार, मिशनरी प्रशिक्षण, साहित्य और संचार माध्यमों से मंत्रालयो के विभिन्न प्रकारों में शामिल करना है।

ईसाई धर्मप्रचारकों ने भारत में आकर ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के माध्यम से दलितोंध्दार के लिए निम्नलिखित कार्य किए -

१. शैक्षिक योगदान :

भारत में इस समय वर्णव्यवस्था का बोलबाला था। वर्णव्यवस्था में जब शूद्रों को ह ीपढने-लिखने का कोई अधिकार नही था तो दलितों की बात तो दूर ही रही। ब्रिटीश सरकार ने भी सत्ता में आने के बाद १८५५ तक अछूतों के कोई पाठशाला शुरु नहीं की थी। जबकि क्रान्तिबा जोतीराव फुले दाम्पत्ती ने निजी तौर पर पूना में अछूतों के लिए पाठशाला शुरु की थी।

१८८१-८२ में संपूर्ण भारतवर्ष में प्राथमिक स्कूल में केवल २८६२ तथा अंग्रजी स्कूल में केवल १७ दलित विद्यार्थी शिक्षा ले रहे थे। जबकि कॉलेज तक कोई भी दलित विद्यार्थी नहीं पहुंच पाया था। ईसाई धर्मप्रचारक जब भारत में आए तो उन्होंने इन दलितों की बस्तियों में प्राथमिक पाठशालाएं शुरु की। जब दलित बच्चों को पढाने के लिए सवर्ण शिक्षकों ने मना कर दिया तो मुस्लिम शिक्षकों को नियुक्त करके अछूतों के बच्चों को शिक्षा देने का काम किया। इस प्रकार अछूतों मे जो कुछ बच्चे पढ पाए इसमें ईसाई धर्मप्रचारकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

२. पत्रिका का प्रकाशन :

ईसाई धर्मप्रचारकों ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए जून, १८४२ में अहमदनगर से 'ज्ञानोदय' नामक पत्र शुरु किया था। इस प्रकार की पत्रिकाएं भारत के अन्य कई भागों में भी शुरु की गई थी। इन पत्रिकाओं के माध्यम से वे लोगों में सामाजिक जागृति निर्माण करने का काम कर रहे थे। इन पत्रिकाओं के माध्यम से यह बताया जाता था कि, किस प्रकार से हिन्दू धर्म मानवता के लिए धर्म न होकर कलंक है। वे हमेशा हिन्दू धर्म की बुराईयों से भारतीय जनता को अवगत कराया

करते थे। साथ ही वे यह लिखना नहीं भूलते थे कि ईसाई धर्म सारी जता के लिए कितना मानवीय धर्म है जिसे सारे लोगों ने अपनाना चाहिए।

ऐसी पत्रिकाओं में संपूर्ण भारतवर्ष में दलितों पर जहां पर भी अन्याय–अत्याचार होते थे उसकी जानकारी इन पत्रिकाओं में प्रकाशित की जाती थी। एक प्रकार से ईसाई धर्मप्रचारक दलितो पर हो रहे अत्याचार को आम जनता एवं सरकार के सामने लाने का काम कर रहे थे। साथ ही दलितो को यह भी बताया जा रहा था कि किस प्रकार से उनके हिन्दू धर्म में बन रहने के कारण ही उनपर सवर्ण लोग अन्याय–अत्याचार करते है। इस पत्रिका के माध्यम से इन धर्मप्रचारकों ने अछूतों की बडी सेवा की।

चार्ल्स ग्रांट, विलियम विल्बरफोर्स, केरी, एलेक्जेंडर डफ, ऐब दुबोए आदि लेखकों ने भारतीय सामाजिक ढांचे और विशेषकर हिन्दुओं की तीव्र आलोचनाएं की। भारत में ईसाई मिशनरियों का अपने धर्म की प्रशंसा करना तो समझ में आता है लेकिन राजनीतिक सत्ता से संरक्षण के पश्चात अपने यहाँ के धर्मो को झूठा, आडंबरी, पाखंडी बताना सरासर अनुचित था। कार्नवालिस से कैनिंग तक प्रायः प्रत्येक गवर्नर

जनरल और अधिकांश उच्च प्रशासकों के भारतीयों के सम्बन्ध में तिरस्कारात्मक विचार थे। बैटिक, मेटकाफ तथा मैकाले आदि प्रशासक भी भारतीय समाज में आमूल परिवर्तन करना चाहते थे। वे यहॉ की विभिन्न कुरीतियों और अंधविश्वासों का वर्णन करके अपने सुधारवादी दृष्टिकोण को स्पष्ट करना चाहते थे लेकिन भारतीय (विशेषकर हिन्दू) समाज और संस्कृतिक के प्रति उनके मन में घोर घृणा थी।

३. आर्थिक सहायता :

इस समय तक आज के मुकाबले दलितों की आर्थिक अवस्था बडी ही ह्रदयद्रावक थी। दलितों को एक वक्त का खाना भी ठिक से नसीब नहीं होता था। तन पर ओढने के लिए कपउे और आसरे के लिए छत की बात तो दूर रही। ऐसे वक्त ईसाई धर्मप्रचारकों ने दलितों को अनाज, कपडा और धन देकर उनकी बडी सहायता की। आज भी हमें दिखाई देता है कि ईसाई धर्मप्रचारक लोगों को अपने धर्म में लाने के लिए विविध तरह के प्रलोभन देते रहते है। स्वार्थवश ही सही दलितों को इससे बडी राहत मिली। दलित तो सवर्णे के ही धर्म को माननेवाले होने के बाद भी उनके साथ पशुओं से ीाी बदत्तर व्यवहार किया करते थे। लेकिन ईसाई धर्मप्रचारकों द्वारा स्वार्थवश ही सही अछूतों को अपने धर्म

में धर्मांतरीत करने के उददेश्य से जो सेवा की वह दलितों के लिए बडी सहायक सिध्द हुई।

४. इंजिलवाद और चर्चारोपन :

इंजिलवाद और चर्चारोपन के मुख्य मंत्रालय का गठन १९९८ के दौरान कुल मिलाकर ५९० से अधिक बपतिस्ता का निर्माण किया गया। यह कार्यक्रम सबसे पहले जनजातियों के बिच चलाया गया। इंजिलवाद और चर्चारोपन में विभिन्न जनकल्याण हेतु चर्चासत्रों का गठन करना अंततः संपूर्ण मानव कल्याण हेतु उपाययोजनाओं का निर्माण करना। इस तरह की सामुदायिक चर्चा से धर्मप्रसार का कार्यक्रम चलाया जाता था।

५. चिकित्सा सुविधा :

जिस समाजत व्यवस्था में दलितों को छूना तो दूर की बात उनकी दाया पडने से ही सवर्ण अपवित्र हो जाते है ऐसी समाज व्यवस्था में अछूत तो चिकित्सा लाभा के बारे में दूर-दूर तक सोच भी नहीं सकते थे।

ईसाई समुदाय के लोग बडे ही सेवाभावी लोग होते है आज भी शिक्षा और चिकित्सा क्षेत्र में उनके द्वारा दी जा रही सेवा सर्वोत्तम है,

इसे कोई झुठला नहीं सकता। जब ईसाई धर्मप्रचारक भारत में धर्मप्रचार के लिए आए तो उन्होंने देखा कि अछूतों के लिए भारत में कोई चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे समय उन्होंने दलितों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए धर्मार्थ दवाखानें खोले और दलितों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई। इससे हजारों दलितों को जीवनदान मिला।

६. स्वास्थ देखभाल :

जनजातिय लोगों को कृषी ज्ञान के साथ-साथ जुडे त्यौहारों का आयोजन करना, सूर्य और वर्षा के मनभावन के लिए त्यौहारों का जस्न मनाना। जनजातिय वर्ग में प्रशिक्षित स्वास्थ कार्यकर्ताद्वारा क्लिनिक के माध्यम से चिकित्सा देखभाल करना। विभिन्न संक्रामक रोगों से जनजातिय लोगों में जागृकता लाना।

७. इंजिलवाद और चर्चारोपन :

इंजिलवाद और चर्चारोपन के मुख्य मंत्रालय का गठन १९९८ के दौरान कुल मिलाकर ५९० से अधिक बपतिस्ता का निर्माण किया गया। यह कार्यक्रम सबसे पहले जनजातियों के बिच चलाया गया। इंजिलवाद और चर्चारोपन में विभिन्न जनकल्याण हेतु चर्चासत्रों का गठन करना

अंततः संपूर्ण मानव कल्याण हेतु उपाययोजनाओं का निर्माण करना। इस तरह की सामुदायिक चर्चा से धर्मप्रसार का कार्यक्रम चलाया जाता था।

ईसाई मिशनरीयों द्वारा विभिन्न सृजनात्मक कार्यक्रमों की शुरुवात की गई है। इन कार्यक्रमों में से साक्षरता कार्यक्रम भारत में मिल के पत्थर के रुप में साबित हुआ है। इस कार्यक्रम के माध्यम से अंग्रजी शिक्षा का प्रसार तथा प्रचार भारत में विकास के रुप में देखा जा सकता है। जनजातिय लोगों में ज्ञान एवं शिक्षा के प्रति प्रेरित करने का महत्वपूर्ण कार्य ईसाई मिशनरीयों द्वारा किया गया।

८. बालविकास :

जनजातिय लोगों में खान-पान के प्रति जागरुक कर शिशु मृत्यू दर कम करने का महत्वपूर्ण कार्य ईसाई मिशनरीयों द्वारा किया गया। गरिबों के इलाज में सहायता कर बालविकास को बढावा देने का कार्य किया गया। जनजातिय बच्चों के शिक्षा के लिए पैसे और खेती के लिए बिज खरिदने हेतु मदत प्रदान करने का कार्य भी उन्होंने किया।

९. मिशनरी प्रशिक्षण :

ईसाई मिशनरीयों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत मिशनरी प्रशिक्षन का अंतर्भाव किया गया है। इसका मुख्य उददेश धर्मांतरनीत लोगों में ईसाई धर्म के प्रति सदभाव तथा मानवता कल्याण का बिजारोपन करना था। इस प्रशिक्षण के माध्यम से लोगों को ईसाई धर्म के प्रति आकर्षित कर दिशा निर्देशन का कार्य किया जाता है।

१०. अस्पृष्यता एवं अंधश्रध्दा निवारन :

ईसाई मिशनरीयों द्वारा स्थानिय आदिवासीयों में फैले बूरी प्रथाओं को नष्ट करना और उनमें अंधश्रध्दा से उजागर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। सुसमाचार का संदेश देकर लोगो के जीवन में नवप्रकाश तथा उनके जीवनशैली में बदल लाने का कार्य उनके द्वारा किया गया है।

अस्पृष्यता निवारन का कार्य भी देश के विकास हेतु महत्वपूर्ण जान पडता है। इसके अंतर्गत लोगों में श्रेष्ठता-कनिष्ठता, उच्च-निचता, अमिर-गरीब, स्पृष्य-अस्पृष्य, जातिभेद तथा वर्गवाद का विध्वंस किया गया है। लोगों में जनकल्याण और मानवता के प्रति सदभाव तथा प्रेम का निर्माण करने का कार्य किया गया है।

११. सामाजिक सुधार एवं कानुनी उपाययोजना :

भारतीय समाज में नैतिक सुधारों के अंतर्गत ईसाई मिशन की सामाजिक गतविधीयों के तरफ ध्यान देना महत्वपूर्ण है। सामाजिक सुधार हेतु कानुनी उपाययोजना निर्माण करना अंततः पिडीत व्यक्तियों के प्रति मूलभुत हक और अधिकारों से जागरुक करने का कार्य किया गया। सामाजिक बूराई जैसे विधवा को जलाया जाना, सति प्रथा, बाल-विवाह जैसे कु-प्रथाओं को कानुनी अधिनियम अंतर्गत जडता से नष्ट करने का कार्य भी मिशनरीय गवर्नर जनरल विलियम बेन्टीक जैसे लोगों द्वारा किया गया है।

३.३ ईसाई धर्म के प्रति प्रतिक्रीयायें :

१९ वीं सदी में भारत को अभुतपूर्व सामाजिक, धार्मिक आंदोलन के रुप में जाना जाता है। इस सदीं को सामाजिक, धार्मिक विक्षोभ का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। ब्राम्हों समाज, आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन के आंदोलन का प्रभाव इस सदी में दिखाई देता है। थियोसोफिकल समाज का योगदान भी इस विक्षोभ में अंतर्भुत है। इन आंदोलनो के द्वारा ईसाई मिशनरीयों को चुनौती भरा जवाब देने की

चेतना एवं एक उच्च स्तर का आत्मविश्वास निर्माण करने हेतु योगदान रहा है। इन आंदोलनों के निर्माण के पिदे विभिन्न उत्तेजक दिखाई देते है। उत्तेजक बलों में विशेषता पाश्चिमात्य संस्कृति का अंर्तभाव है जैसे ब्रिटीश सरकार, अंग्रजी शिक्षा, साहित्य, ईसाई धर्म, प्राच्य अनुसंधान, युरोपीय विज्ञान और दर्शन, पश्चिमी सभ्यता के तत्वों का अंतर्भाव है।

३.४ ईसाई धर्म की तरफ इतर धर्म के आकर्षन का कारण :

''ईसाई धर्मधारन करनेवाले व्यक्तियों की सामाजिक, पारिवारीक एवं आर्थिक स्थिती का अध्ययन – वर्धा तहसिल के विशेष संदर्भ में'' शोध प्रबंध आयोजित किया गया है। वर्धा तहसिल के अंतर्गत कॅथोलिक और प्रोटेस्टेंट मिशनरीयों के अलावा यहा अन्य इंजिल मिशनरीयों के द्वारा आदिवासी बहुल क्षेत्र में सक्रिय समुह कार्य कर रहे है।

ईसाई धर्मांतरीत व्यक्तियों के साथ चर्चा अंततः विचारों से निम्न लिखीत निष्कर्ष परिणामों के रुप में उभरकर आया है।

१. ईसाई मिशनरी द्वारा स्कुल, होस्टेल, औषधालयों और विभिन्न सृजनात्मक कार्यक्रम शुरु किये गये है। अधिकांश मिशनरीया इन

अभियानों को मुख्य रुप से स्थानिय लोगों के संबंधो को विकसित करने के लिए, उनके परीशानीयों को सुनने और उनकी कठीनाई के प्रति सहानुभुती रखते है। बिमार लोगों के लिए प्रार्थना करना और उनका इलाज कर अपने प्रार्थना में शामिल करने का कार्य करते है। कल्याण कार्यक्रमद्वारा लोगों को ऋण के रुप में पम्प सेट, बच्चों की शिक्षा के लिए पैसे और खेती के लिए बिज खरीदनें में मदत प्रदान करते है। धर्मांतरीत व्यक्तियों को पादरी बनाकर चर्च में काम और धर्मप्रचार-प्रसार के लिए वेतन भी दिया जाता है। इन्हीं कारनों की वजह से गैर ईसाई धर्म के लोग ईसाई धर्म की ओर आकर्षित होते है।

२. यह जरुरी नही की अधिकांश धर्मांतरीत व्यक्ति अपने व्यक्तिगत विश्वास पर येशु मसिहा को मुक्तिदाता के रुप में स्विकार करते है अंततः वे अपने घरों में हिन्दु देवताओं के साथ-साथ येशु की तस्वीर भी रखते है। बेहतर सामाजिक जीवन और जाति पदानुक्रम सें मुक्ति की आशा पर मुख्य रुप से धर्मांतरन कर रहे है। बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा जिससे की नौकरी में मदत मिल सकें और बेहतर स्वास्थ देखभाल आदि के लिए उम्मीद रखकर धर्मांतरन के प्रति आकर्षीत किया जाता है।

३. संक्रामक रोगों एवं संकटों से ग्रसित वक्त में पादरीयों तथा मिशनरीयों द्वारा सहानुभूती के दृष्टीकोन में एक दिवसीय प्रार्थना का आयोजन कर उन लोगों को धर्मांतरन के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।

४. धर्मांतरीत व्यक्तियोंकी जीवन के स्तर में सुधारना हुई है। उन्होंने साफ कपडे पहनना शुरु किया है और अपने आस-पास का परिसर साफ-सुथरा रखने में जागरुकता आयी है। उनकी जीवनशैली में बदलाव नजर आता है। इसके अलावा मिशनरी स्त्रोतों से यह जानकारी प्राप्त होती है की, उनमें से कुछ लोग डॉक्टर, वकील और सरकारी नोकरी पाने के हकदार हुऐ है। जो की गैर-ईसाई धर्म के लोगों में अभी भी इस दिशा में संघर्ष जारी है। यह अंतर मुख्य रुप से ईसाई मिशन की शैक्षणिक प्रयासों को प्रभावित करता है और उनसें मिले मदत के कारन ही यह संभव हुआ है। यही वजह है जो की गैर ईसाई धर्म के लोग इस धर्म को तरफ आकर्षीत हो रहे है।

संदर्भ सूची

१. अप्रकाशित लेख : दलितोध्दार में ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान, गजभिए संजय., नागपूर.

२. डॉ. जाटव डि. आर., राज्य और अल्पसंख्यक

३. डॉ. जाटव डि. आर., डॉ. अम्बेडकर और भारतीय दर्शन के समीक्षक.

४. सामाजिक समाचार पत्रिका., आदिवासी सत्ता, मार्च २०१३.

५. फादर फ्रासिंस दिब्रिटो., येशुचा यशाचा मार्ग.

६. *A Ministry of Christian Writing*., The Light of Life :The Magazine for Christian Growth.

७. *Abraham P.*, Issues And Concerns Of Christian Today

८. **http://en.wikipedia.org/wiki/christianity_in_india.**

चतुर्थ अध्याय

धर्मांतरीत व्यक्तीयोंका वैयक्तिक अध्ययन

ईसाई मिशनरीयों के धर्मांतरण के बाद वर्धा तहसील के ईसाई धर्मांतरीत व्यक्तियोंकी सामाजिक, पारिवारीक एवं आर्थिक स्थिती में किस प्रकार बदलाव आया है, इसका वैयक्तिक अध्ययन इस शोध विषय में किया गया है। वर्धा तहसील की क्या विशेषताऐं है? उसका भौगोलीक क्षेत्र कैसा है? इसका भी अध्ययन करणा महत्वपूर्ण है।

४.१ वर्धा तहसिल एक परिचय :

वर्धा तहसिल अपने आप में एक ऐतिहासीक पहचान रखता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के काल में वर्धा तहसिल का बहुत बडा योगदान रहा है। क्योंकी वर्धा से केवल ५ कि.मी. पर सेवाग्राम आश्रम है। इस आश्रम को गांधीजींने अपना आश्रम बनवाया था। और स्वतंत्रता संग्राम का आंदोलन इसी सेवाग्राम आश्रम से चलाया गया था। वर्धा तहसिल के अंदर अंग्रेज शासन के खिलाफ बडा विद्रोह क्रांतिकारीयोंने किया था।

वर्धा तहसिल यह शहर मुंबई–नागपूर व दिल्ली–चेन्नई इस रेल्वे मार्ग का महत्वपूर्ण जंक्शन है। वर्धा शहर को पहले पालवाडी इस नामसें जाना जाता था। इसका अर्थ है जहॉ सब्जी का उत्पादन अच्छा होता है, उसे पालकवाडी कहते है। वर्धा तहसिल नागपूर जानेवाले मार्ग से जुडी हुई है। वर्धा तहसिल से प्रमोदजी शेंडे ये महाराष्ट्र सरकार में विधान सभा के उपाध्यक्ष भी रह चुके है। वर्तमान में इस वर्धा तहसिल के आमदार तथा महाराष्ट्र राज्य पाटबंधारे विभाग के उपाध्यक्ष प्रा. सुरेश देशमुख जिम्मेदारी संभाल रहे है। वर्धा यह एक तहसिल भी है और जिला भी है। वर्धा जिला के अंदर वर्धा यह एक तहसिल है। वर्धा जिले के अंदर वर्धा, देवली, समुद्रपूर, आष्टी, आर्वी, कारंजा, हिंगणघाट व सेलु इन तहसिलो को सम्मेलीत किया है।

वर्धा जिले का नाम वर्धा नदी से रखा गया है। अब्दुल फजल इस इतिहासकार ने लिखे हुऐ ऐन–इ–अकबरी इस ग्रंथ में वर्धा नदी का उल्लेख किया गया है। सातपूडा पर्वत के मुलताई पठार पर ७८६ मीटर उँचाई पर बैतुल के पास वर्धा नदी का उगम होता है। यह नदी दक्षिण की ओर चलते हुऐ वर्धा जिले में प्रवेश करती है। महाराष्ट्र राज्य की उपराजधानी नागपूर से वर्धा शहर केवल ७० कि.मी. पर बसा हुआ है।

वर्धा तहसिल प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण होने के कारण अन्य शहरों के नागरीकोंको अपनी ओर आकर्षित करता है।

वर्धा तहसिल का भौगोलिक क्षेत्र :-

वर्धा तहसिल ईशान्य महाराष्ट्र से वर्धा-वैंनगंगा नदी के पश्चिम भागों में बसा हुआ है। पवनार के उत्खनन से प्राप्त हुऐ जानकारी के अनुसार इस परिसर में इ.स. पूर्व १००० से इ.स. पूर्व ८०० तक से मानव वसाहत रही होगी ऐसा अंदाज इतिहासकारों ने निकाला है। वर्धा नदी बहनें के कारन इस क्षेत्र में सिंचन कि व्यवस्था बहुत अच्छी है। वर्धा तहसिल की कुल जनसंख्या ३ लाख १४ हजार ५३७ है। इसमें वर्धा तहसिल के ग्रामिन क्षेत्र कि जनसंख्या २ लाख ०३ हजार ४१ तथा वर्धा नगर परिषद क्षेत्र जनसंख्या १ लाख ११ हजार ११८ है। वर्धा तहसिल के अनुसुचित जाति की जनसंख्या ३६ हजार ६४८ है। तथा अनुसुचित जनजाति कि जनसंख्या २८ हजार ०६ है। वर्धा तहसिल की स्थापना १ अप्रैल १९५८ को हुई थी। तहसिल के अंदर १५३ गावं आते है। इस तहसिल का भौगोलिक क्षेत्र ७५६.१३ चौ.कि.मी. है।

वर्धा जिले में हि वर्धा तहसिल होने के कारण वर्धा शहर में कलेक्टर ऑफिस भी है तथा पुलिस मुख्यालय है। बच्चों को खेलने के

लिऐ जिला स्टेडीयम की व्यवस्था कि गई है। अन्य प्रशासनिक कार्यालय भी वर्धा शहर में है। सामाजिक न्याय भवन कि भी स्थापना वर्धा शहर में कि गई है। कलेक्टर ऑफिस के बाजु में महात्मा गांधीजी का पुतला तथा वर्धा तहसिल कार्यालय के पास डॉ. बाबासाहब अम्बेडकरजी का पुतला है।

औद्योगिक क्षेत्र :-

वर्धा तहसिल का औद्योगिक विकास होना चाहिऐ इस उददेशसे सेवाग्राम रोड पर स्व. बापुरावजी देशमुख सहकारी सुतगिरणी है तथा मा. प्रमोद शेंडेजी की इंदिरा सुत गिरणी है। वर्धा तहसिल में ही लॉयड्स स्टिल कंपनी तथा उत्तम गॅल्वा यह दो कंपनी कार्यरत है। वर्धा तहसिल के किसान अपने खेती में कपास, तूवर, गेंहु, सोयाबिन की फसल करते है। यहॉ के किसान अपनी फसल वर्धा शहरके कृषी उत्पन्न बाजार समितीमें बेचने के लिए ले जाते है।

शिक्षा सुविधा :-

वर्धा तहसिल यह वर्धा जिले के ही अंदर आती है। इसलिए वर्धा तहसिल के सभी छात्र-छात्राऐं अपनी पढाई पूरी करणे के लिऐ वर्धा शहर में दाखीला लेते है। वर्तमान में बडे शहरों जैसी शैक्षिक सुविधाएं

वर्धा शहर में उपलब्ध है। वर्धा शहरमें कई बी.एड. तथा डी.एड. कॉलेज की स्थापना हुई है। इस शहर में सायन्स में पढने हेतु जमनालाल बजाज सायन्स कॉलेज, आर्टस् के लिऐ यशवंत महाविद्यालय तथा कॉमर्स के लिए जि.एस. कॉमर्स कॉलेज कि स्थापना की है। राष्ट्रीय स्तरपर हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु सबसे पहिला राष्ट्रभाषा प्रचार समिती तथा महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय का निर्माण किया गया है। इतनाही नही तो मेडीकल, इंजिनियर, फार्मसी, दंत महाविद्यालय, सोशल वर्क, पॉलिटेक्निक, डेयरी सायन्स, ॲग्रीकल्चर कॉलेज भी निर्माण किये गये है। इसीलिऐ यहा पढने के लिऐ देश के कोने-कोने से छात्र-छात्राएं आते है तथा रोजगार पाते है।

पर्यटन स्थल :-

वर्धा तहसिल यह एक अच्छा पर्यटन स्थल है। वर्धा शहर के अंदर आने वाला लक्ष्मीनारायन मंदिर जमनालाल बजाज के दादा ने सन १९०५ में बनवाया हुआ है। इस मंदिर में लक्ष्मी-नारायन की सुंदर मुर्ति है यह मंदिर १९ जुलै १९२८ को जमनालाल बजाज ने अछुतो के लिए खुला किया था। वर्धा शहर के अंदर गिताई मंदिर की स्थापना की गई है। इस मंदिर का पायाभरणी समारंभ सरहद गांधी खान अब्दुल्ल

गफारखान इनके द्वारा ४ नवम्बर १९६९ को हुआ। तथा इस काम को प्रत्यक्ष रुप में शुरुवात १ मई १९७७ को हुआ। इस मंदिर का उद्घाटन भारत के तत्कालिन उपराष्ट्रपति एम. हिदायतुल्ला इनके द्वारा हुआ था। गिताई मंदिर के पास ही शांति स्तुप बनवाया है। इस स्तुप में गौतम बुध्द की मुर्तिया विविध रुपोमें दिखाई देती है। तथा वर्धा से कुछ ही दुरी पर सेवाग्राम का आश्रम है। इस आश्रम में अनेक देश विदेश के लोग भेट देने के लिए आते है। पवनार में विनोबा भावे का आश्रम है। वर्धा शहर में मगनसंग्राहालय है। इस मगनसंग्राहलय में खादी के कपउे तथा विविध कलाकृती के वस्तुओंका निर्माण किया जाता है।

अन्य सुविधाऐं :-

वर्धा तहसलि के अंदर सरकारी अस्पताल कि स्थापना हुई है। वर्धा शहर में सावंगी मेघे में आचार्य विनोबा भावे ग्रामिण रुग्णालय की स्थापना वर्धा के सांसद रहचुके दत्ता मेघे ने की है। तथा सेवाग्राम में भी बहुत बडा अस्पताल बनाया हुआ है। सावंगी मेघे तथा सेवाग्राम का अस्पताल आधुनिक होने से वहा इलाज करने के लिए भारत के कई जगह से लोग आते है।

साथ ही शहर में अपराधों को रोकने हेतु पुलिस थाना जेल, न्यायालय की स्थापना की गई है। पंचायत समिती कार्यालय, टेलिग्राफ, पोस्ट ऑफीस, अतिथी गृह आदी बनवाकर वर्धा तहसिल का विकास किया गया है।

इस प्रकार वर्धा तहसिल का संक्षिप्त परिचय दिखाई देता है।

४.२ ईसाई धर्मधारन करनेवाले व्यक्तियों के पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती का अध्ययन :

ईसाई मिशनोंकी एवं ईसाई धर्मधारन करनेवाले व्यक्तियों की पुर्व स्थिती का विस्तृत विश्लेषन अध्याय तृतिय में किया है। वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मधारीत लोगों की धर्मधारन करने से पहले की स्थिती अंतः वर्तमान स्थिती का अध्ययन से पता चलता है की, दोनों स्थितीयों में सकारात्मक एवं नकारात्मक अंतर दिखाई पडता है। वर्तमान में वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मधारीत लोगों की पारीवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती किस प्रकार है इसका अध्ययन करने के लिए मैंने अपने शोध कार्य में प्रश्नावली बनवाई थी। उस प्रश्नावली के माध्यम से वर्धा तहसिल के ५० धर्मांतरीत उत्तरदाताओं को चयनित किया था। इस

प्रश्नावली के माध्यम से उनमें धर्मांतरन के बाद पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती में बदलाव आया इसका विस्तृत विश्लेषन किया गया है। जो सारणी के माध्यम से निम्न प्रकार से दर्शाया गया है। साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी प्राप्त की है।

सारणी क्र. १

लिंग दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	लिंग	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	स्त्री	९	१८
२	पुरूष	४१	८२
कूल योग		**५०**	**१००**

वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत लोगों के धर्मांतरन के बाद उनकी सामाजिक स्थिती इस विषय की जानकारी प्राप्त करने हेतु १८ प्रतिशत स्त्रीयॉं एवं ८२ प्रतिशत पुरुषों का साक्षात्कार लिया गया है। यह तथ्थ उपरोक्त सारणीसे स्पष्ट होता है। असमान अनुपात अर्थात स्त्री एवं पुरुषों के चयन का मुख्य कारन यह है की, लिंग के आधार पर धर्मांतरन कौन ज्यादा स्तरपर करता है यह उपरोक्त सारणी से पता चलता है।

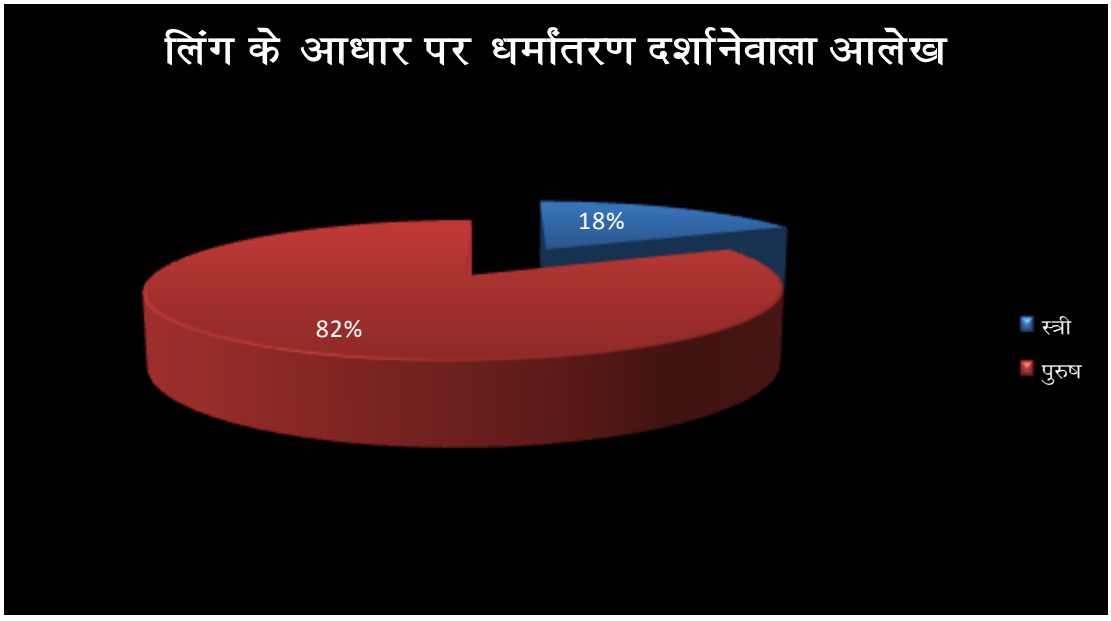

सारणी क्र. २

उम्र के आधारपर उत्तरदाताओं का वर्गीकरन

अ.क्र.	आयु समुह	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	१८ से ३०	५	१०
२	३१ से ४३	२०	४०
३	४४ से ५६	१८	**३६**
४	५७ से ज्यादा	७	१४
कूल योग		**५०**	**१००**

वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत लोगों को उम्र के विषय में प्रश्न पुछा गया। इसमें कुल मिलाकर ५० उत्तरदाताऐं साक्षात्कार में शामिल हुए थे। सुचनाएँ करते समय इकटठा करते समय प्रथमतः आयु समुह के आधार पर वर्गीकरन किया गया। यहॉ विभिन्न आयु के स्त्री-पुरुषों से चर्चा की गई।

उपर दिये हुए सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है की, अध्ययन के दौरान पुछे गये सवाल में १८ से ३० उम्र के १० प्रतिशत उत्तरदाता थे, तो ३१ से ४३ के ४० प्रतिशत उत्तरदाता थे, ४४ से ५६ के ३६ प्रतिशत और ५७ से ज्यादा १४ प्रतिशत उत्तरदाता थे।

अतः निष्कर्षता यह स्पष्ट होता है की, ३१ से ४३ आयु वाले उत्तरदाता सबसे अधिक संख्या में पाये गये है। जिनका प्रतिशत ४० है। तथा सबसे कम संख्या वाले उत्तरदाता ३० वर्ष आयु के उपर समुह में पाये गये।

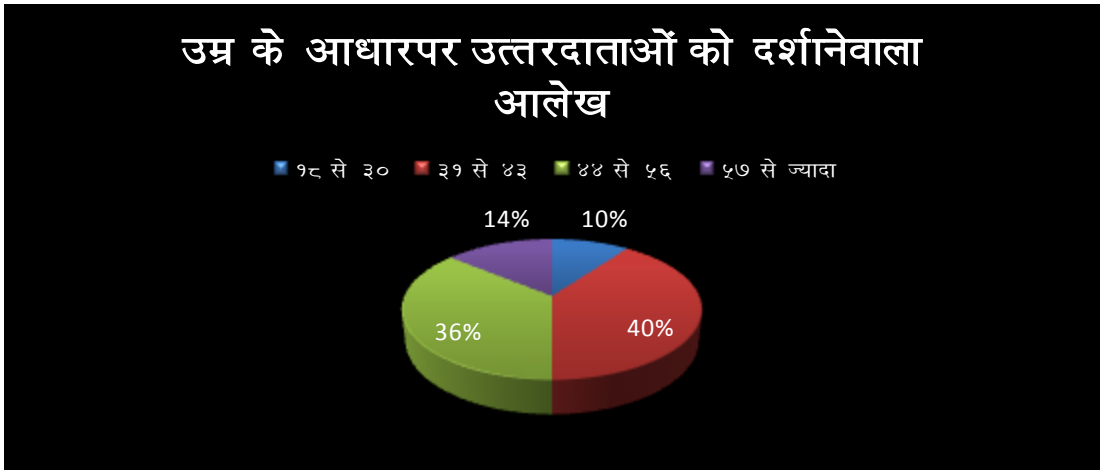

सारणी क्र. ३

उत्तरदाता की शैक्षणिक स्थिती दर्शाती सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	निरक्षर	१०	२०
२	प्राथमिक/माध्यमिक	६	**१२**
३	स्नातक	३२	६४
४	स्नातकोत्तर	२	४
कूल योग		**५०**	**१००**

उपर्युक्त सारणी के तथ्थों के अवलोकन से यह ज्ञात होता है की, निरक्षर लोगों का प्रतिशत २० है। प्राथमिक/माध्यमिक शिक्षा धारन किये हुए वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत उत्तरदाता १२ प्रतिशत है। स्नातक की शिक्षा लिए हुए उत्तरदाता का प्रतिशत ६४ तथा स्नातकोत्तर तक शिक्षा लिए हुए ईसाई धर्मांतरीत उत्तरदाताओं का प्रतिशत ४ है।

उपर्युक्त तथ्थों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है की, वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत उत्तरदाओं में निरक्षर की संख्या का अनुपात कम है। जब की स्नातक तक शिक्षा लेने वाले उत्तरदाओं की संख्या सबसे ज्यादा अर्थात ६४ प्रतिशत है।

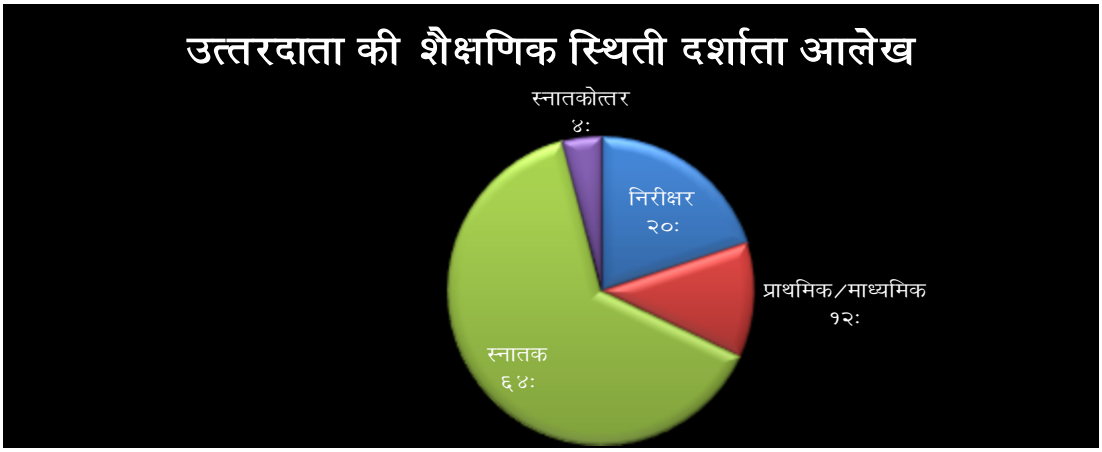

सारणी क्र. ४

धर्मांतर से पहले का धर्म दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हिंदू	२०	४०
२	बौध्द	०४	०८
३	आदीवासी	२४	**४८**
४	मुस्लीम	०२	०४
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेके पुर्व हिंदू धर्म का स्विकार करणेवाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

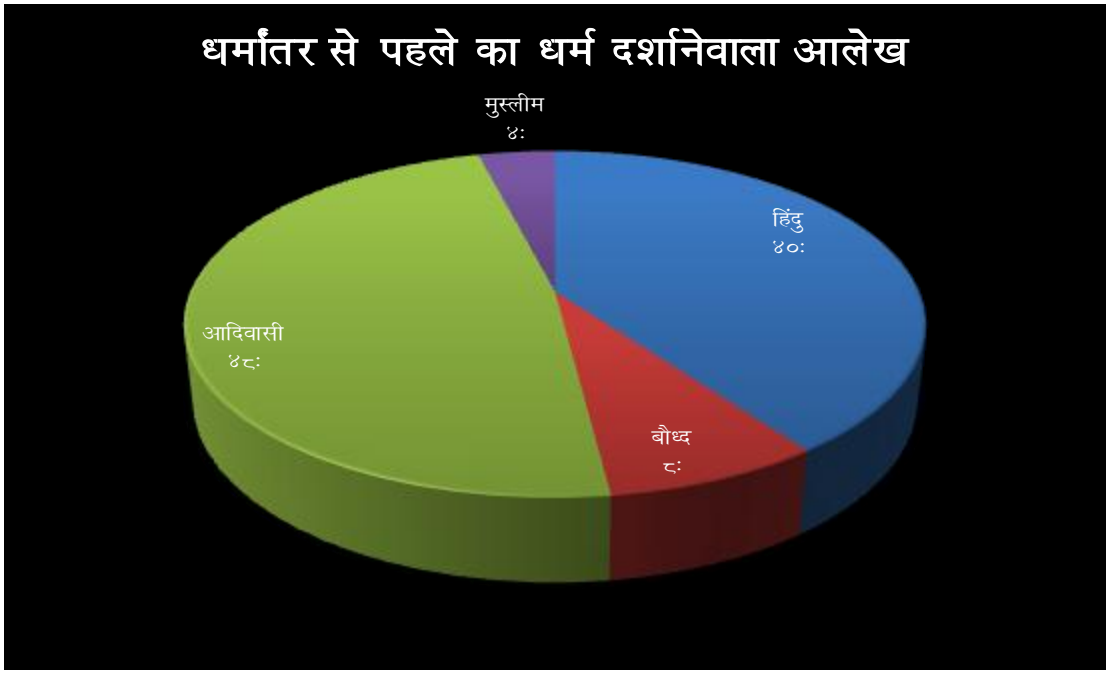

सारणी क्र. ५

धर्मांतर से पहले की जाती वर्ग दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	एस.सी	०४	०८
२	एस.टी.	**१८**	३६
३	व्हि.जे.एन.टी.	१२	२४
४	ओ.बी.सी./एस.बी.सी.	१४	**२८**
५	अन्य	०२	०४
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेके पुर्व एस. टी. जाती वाले लोगों का स्विकार करणेवाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

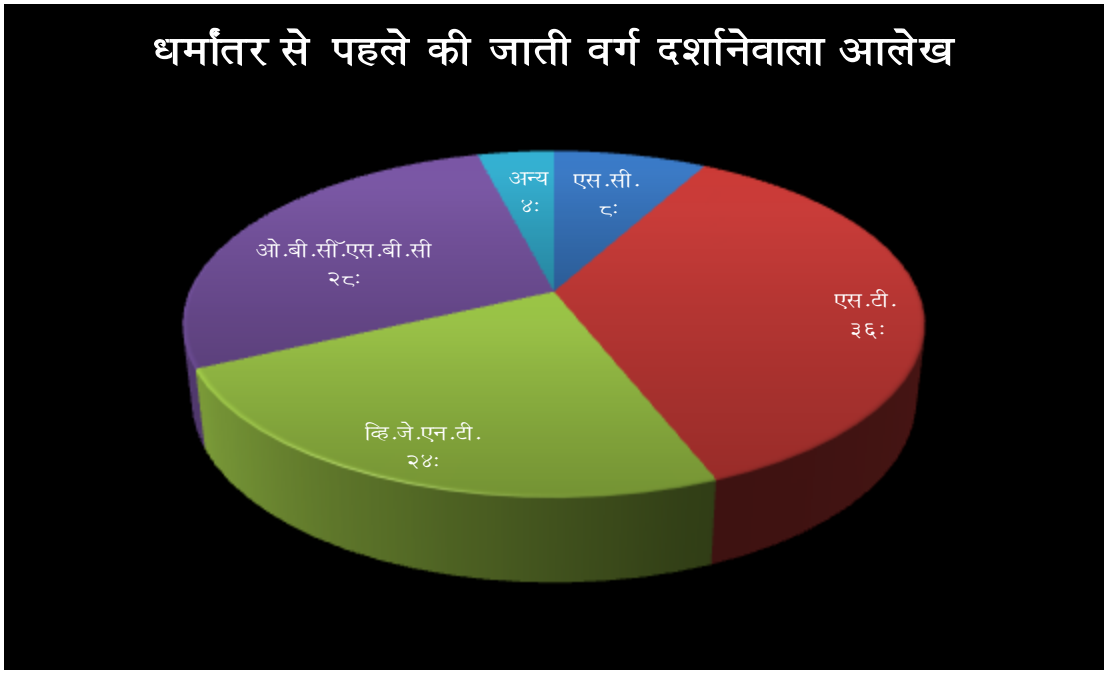

सारणी क्र. ६

सदस्य संख्या दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	१ से ३	२४	४८
२	४ से ६	२०	४०
३	७ से ज्यादा	०६	१२
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले १ से ३ सदस्य संख्या वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

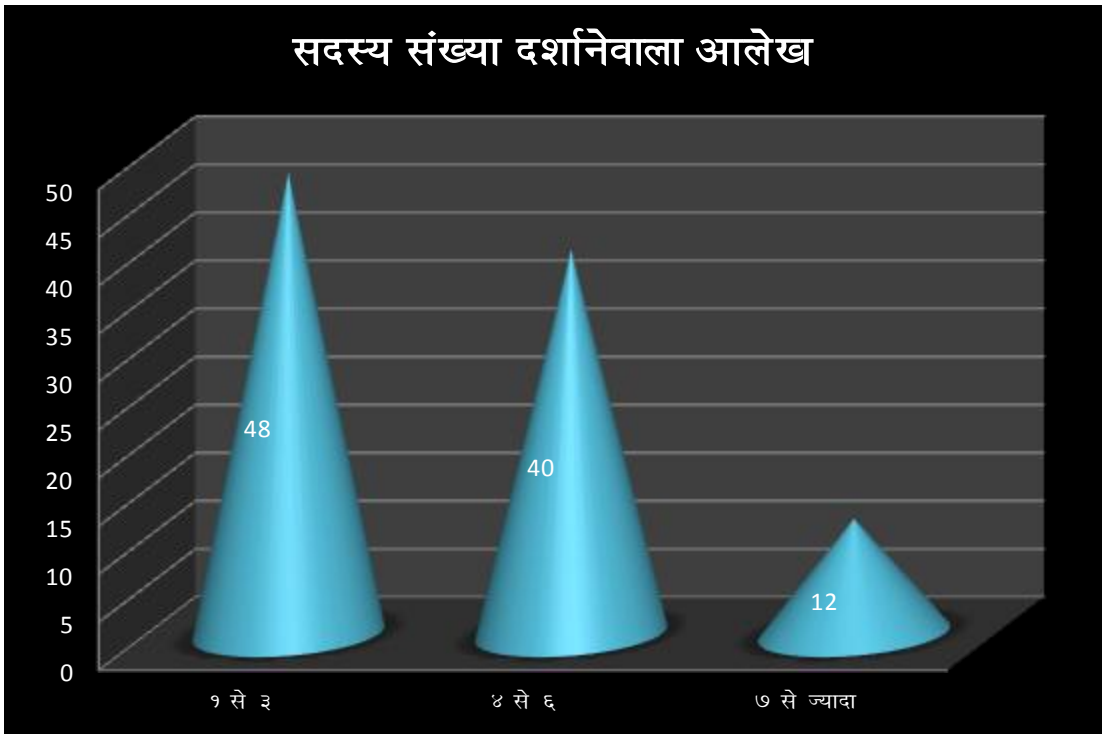

सारणी क्र. ७

परिवार का प्रकार दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	विभक्त	२६	५२
२	संयुक्त	२४	४८
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले संयुक्त परिवार की संख्या वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

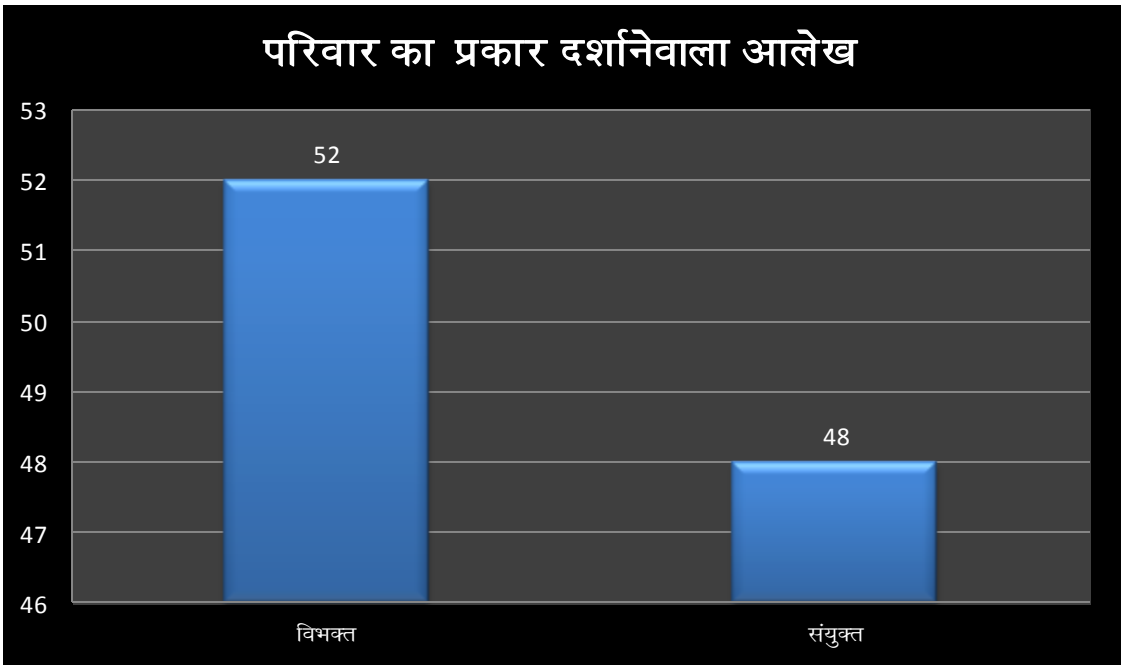

सारणी क्र. ८

शिक्षा की स्थिती दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	साधारन	७	१४
२	अच्छा	३१	६२
३	उच्च	१२	२४
४	इनमेंसे नही	७	१४
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले अच्छे परिवार वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

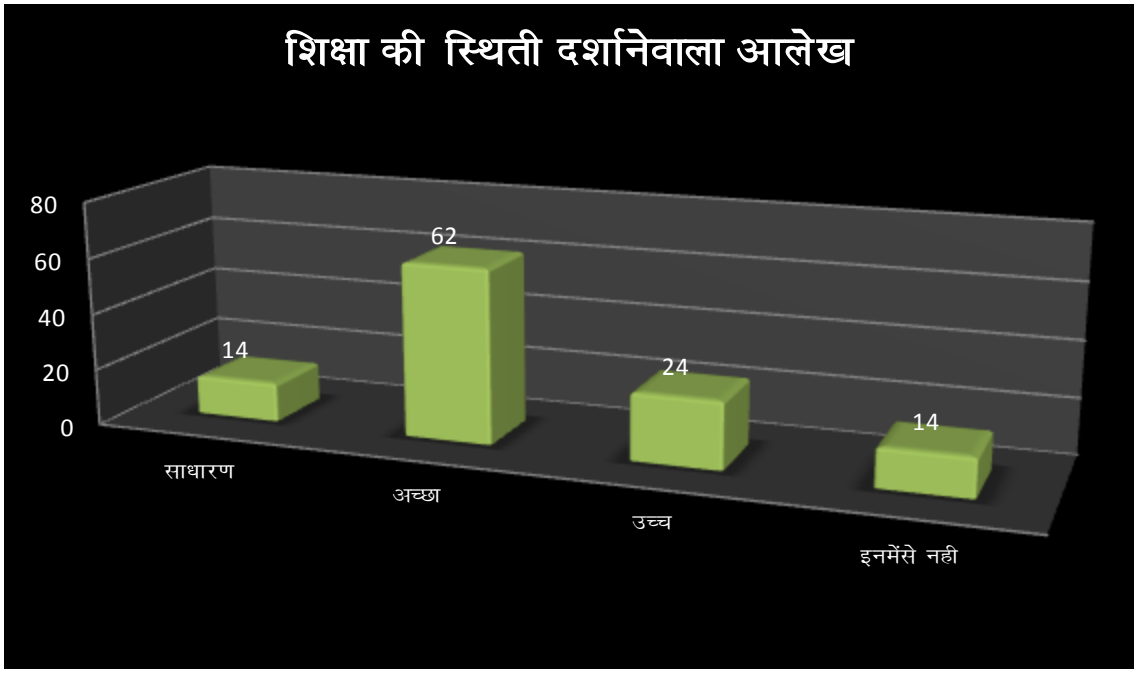

सारणी क्र. ६

परिवार का दर्जा दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	साधारन	३२	६४
२	अच्छा	१२	२४
३	उच्च	०६	१२
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले साधारन कुटुंब स्थिती वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

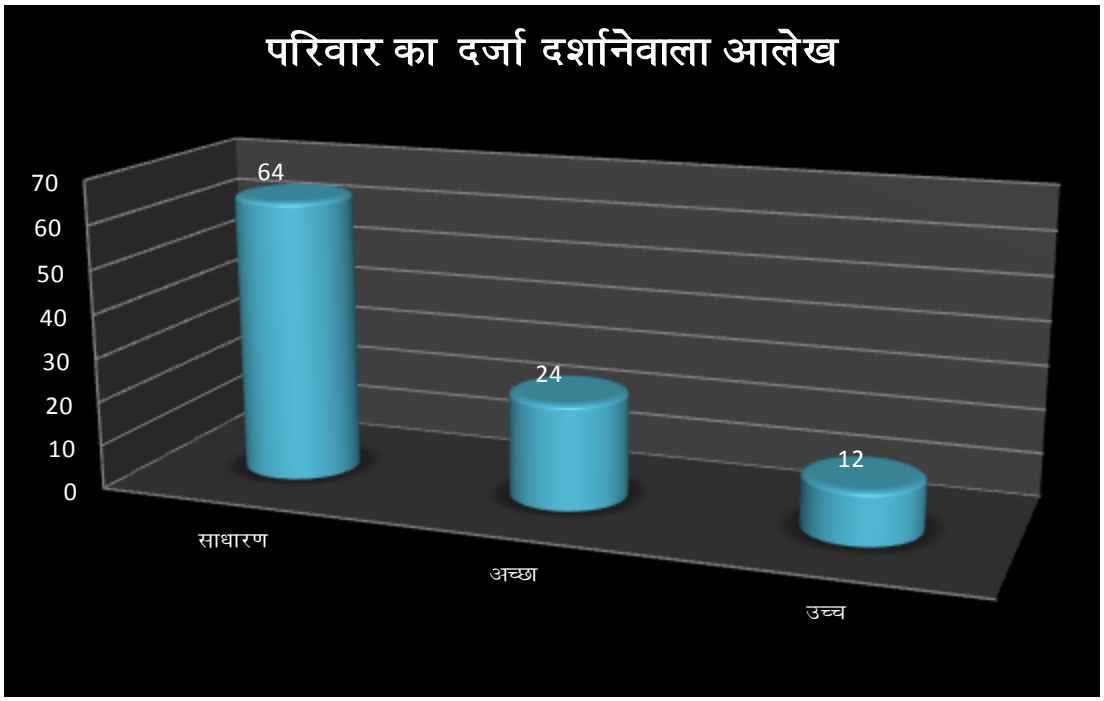

सारणी क्र. १०

सालाना आमदनी दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	२५००० से ३५०००	३०	६०
२	३६००० से ४६०००	९	१८
३	४७००० से ४७०००	८	१६
४	५८००० से ज्यादा	३	६
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले २५००० से ३५००० सालाना आमदनी वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

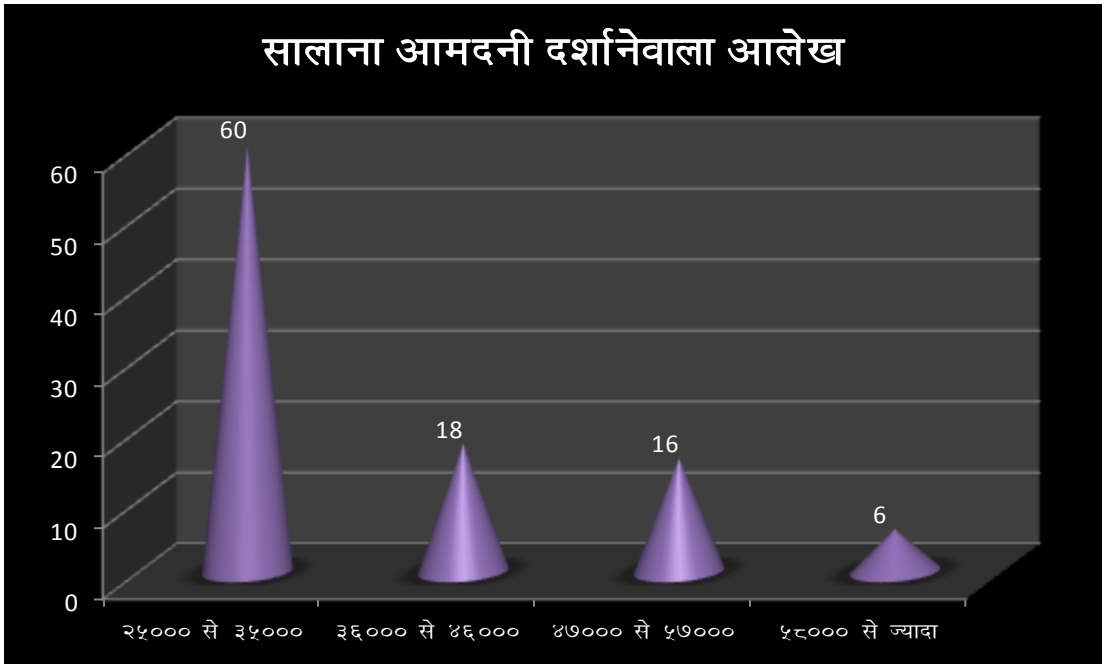

सारणी क्र. ११

ईसाई धर्म कब धारन किया वो दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	१ से २ साल पहले	९	१८
२	३ से ४ साल पहले	१६	३२
३	५ से ६ साल पहले	१४	२८
४	७ साल पहले	११	२२
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले ३ से ४ साल पहले ख्रिश्चन धर्म धारन करने वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

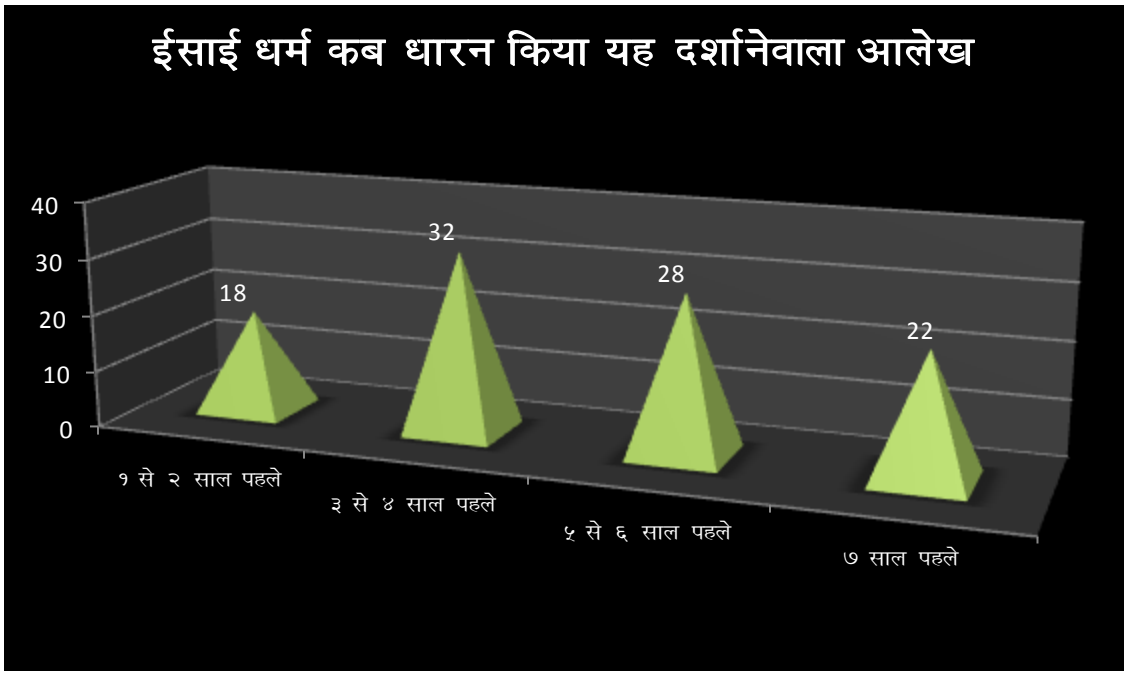

सारणी क्र. १२

धर्मांतर करते समय समस्या दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	४०	८०
२	नही	१०	२०
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले धर्मांतर करते समय समस्या प्रकट होने वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

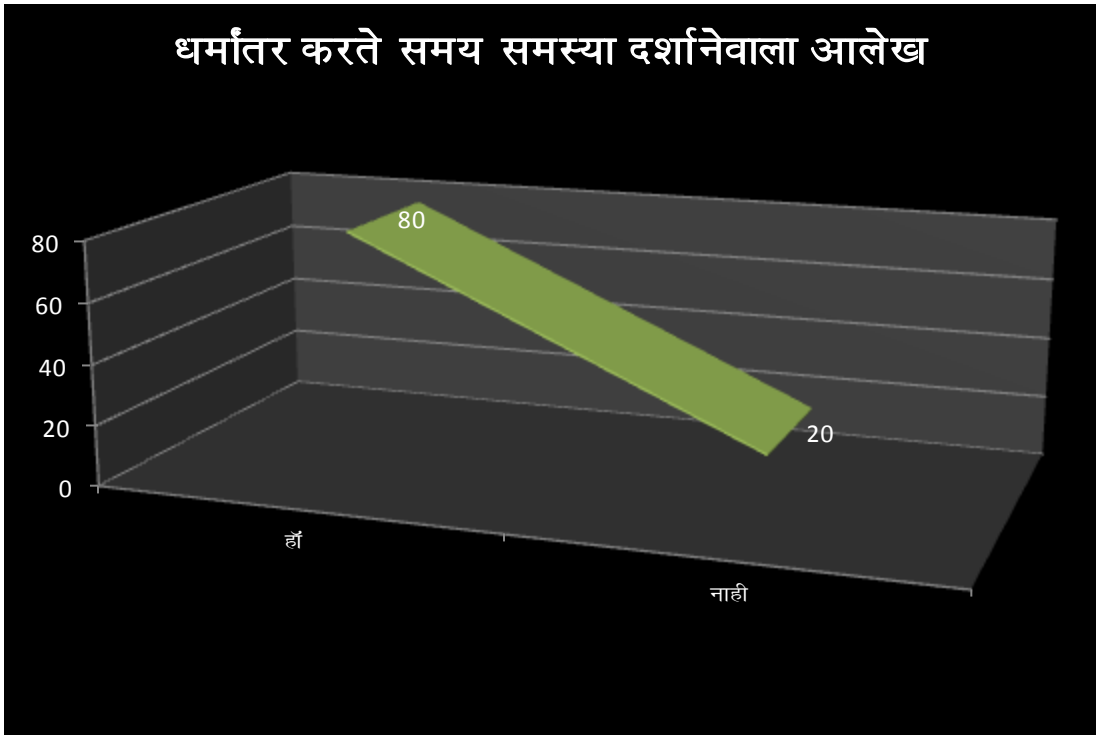

सारणी क्र. १३

धर्म धारण करने के बाद निर्माण हुई समस्या दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉ	०९	१८
२	नही	४१	८२
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले जिन्हे धर्म धारन करने के बाद कोई अडचण नही आई उन उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

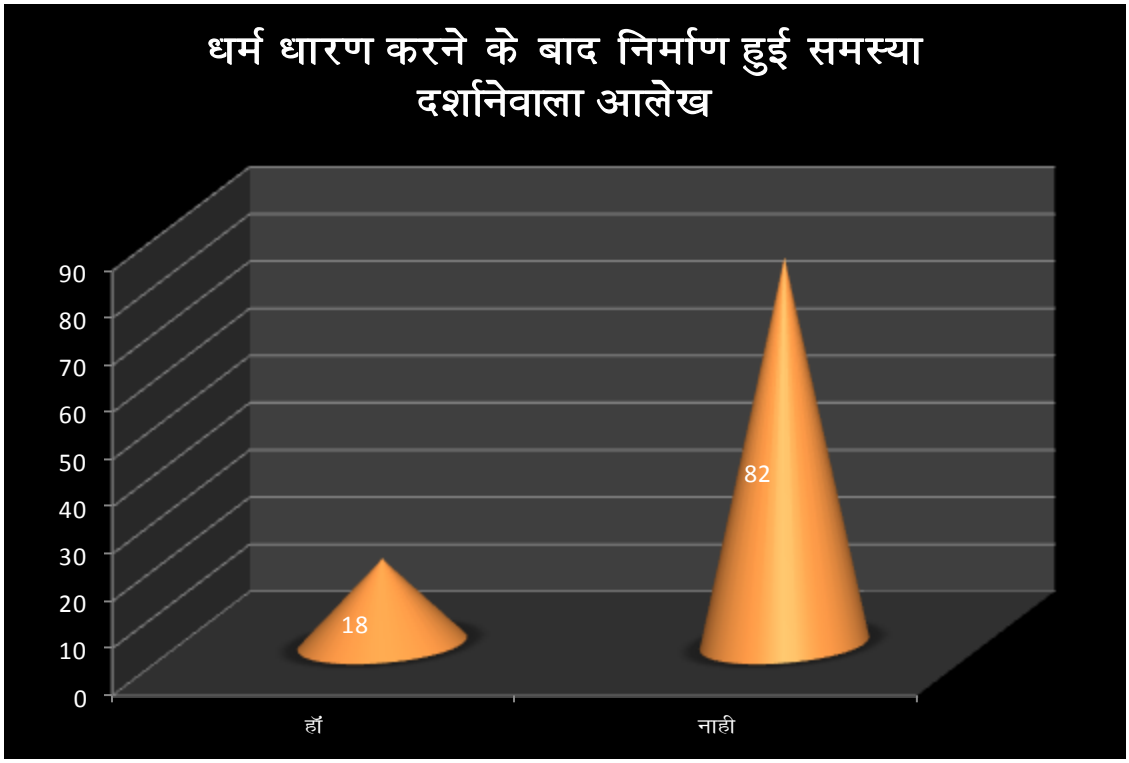

सारणी क्र. १४

धर्मांतर के बाद समान दर्जा दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	३३	६६
२	नही	१७	३४
कूल योग		५०	१००

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले धर्मांतर के बाद समान दर्जा प्राप्त होने वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

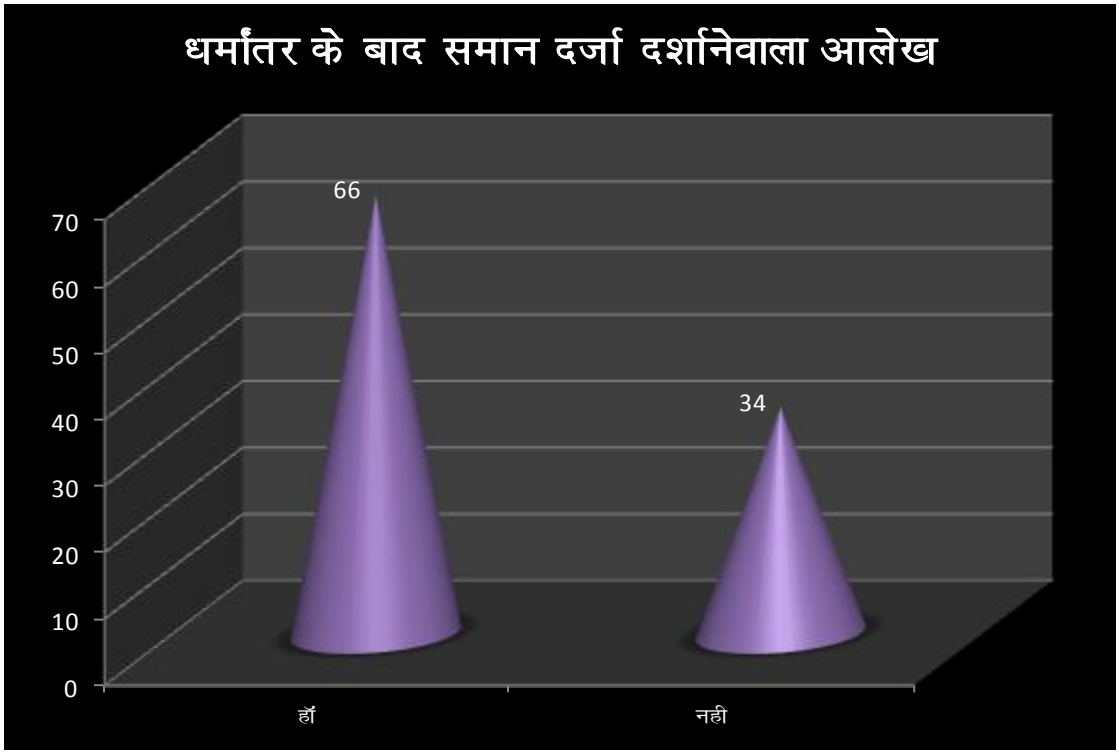

सारणी क्र. १५

धर्मांतर के बाद आर्थिक सुख दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	अच्छी नौकरी मिली	२०	४०
२	आर्थिक अडचन दुर हुई	१२	२४
३	अन्य व्यापर करनेको मिला	११	२२
४	इनमेंसे नही	७	१४
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले साधारन कुटुंब स्थिती वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

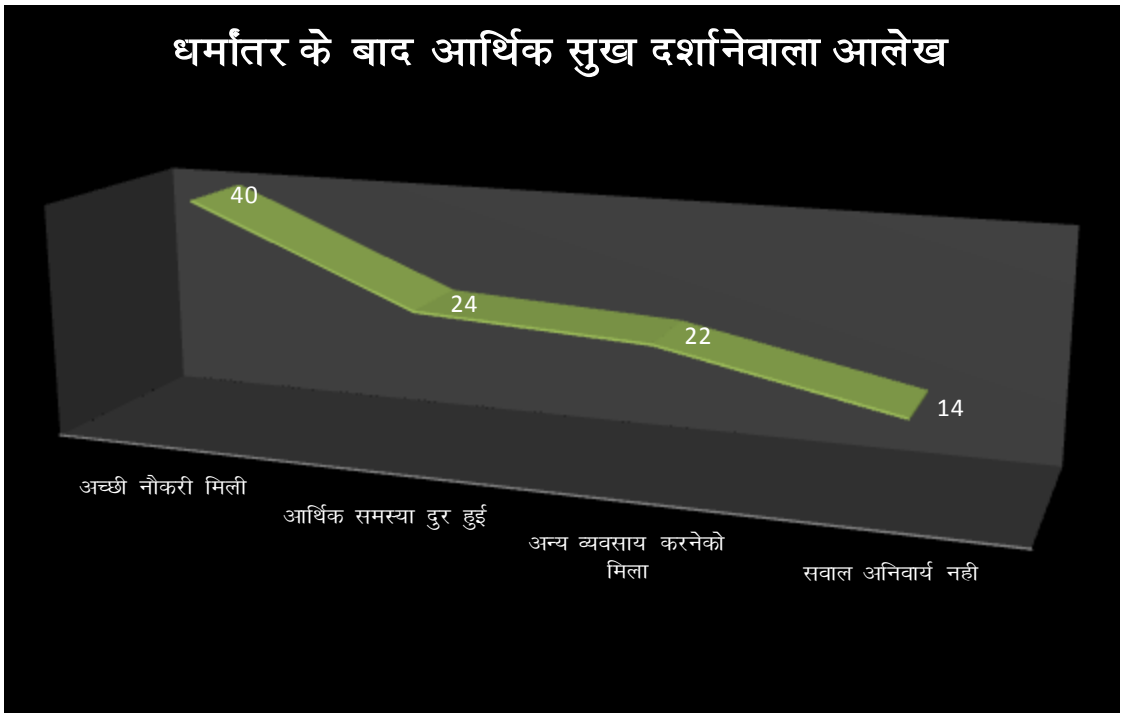

सारणी क्र. १६

धर्मांतर के बाद उस धर्म की पुजा–पाठ दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	४७	९४
२	नही	०३	०६
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर के बाद उस धर्म की पुजा पाठकरने वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

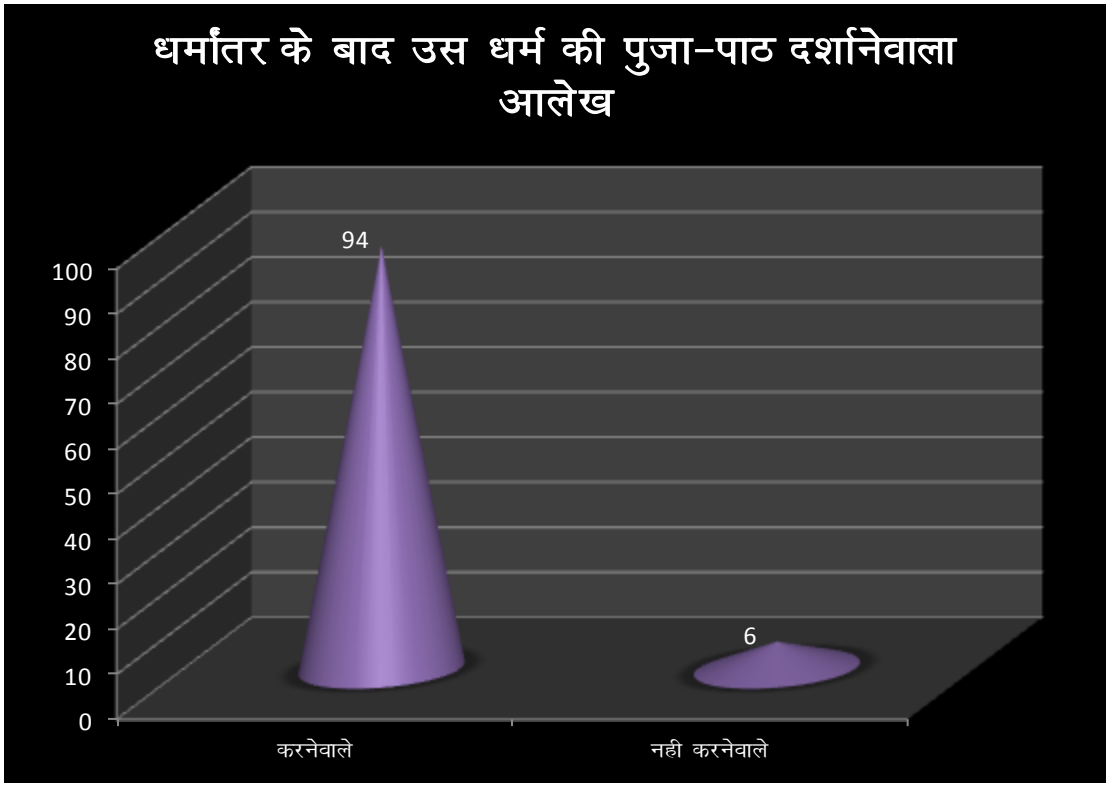

सारणी क्र. १७

धर्मांतर के बाद उस धर्म की सहायता दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	४५	९०
२	नही	०५	१०
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर के बाद उस धर्म की मदत करने वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

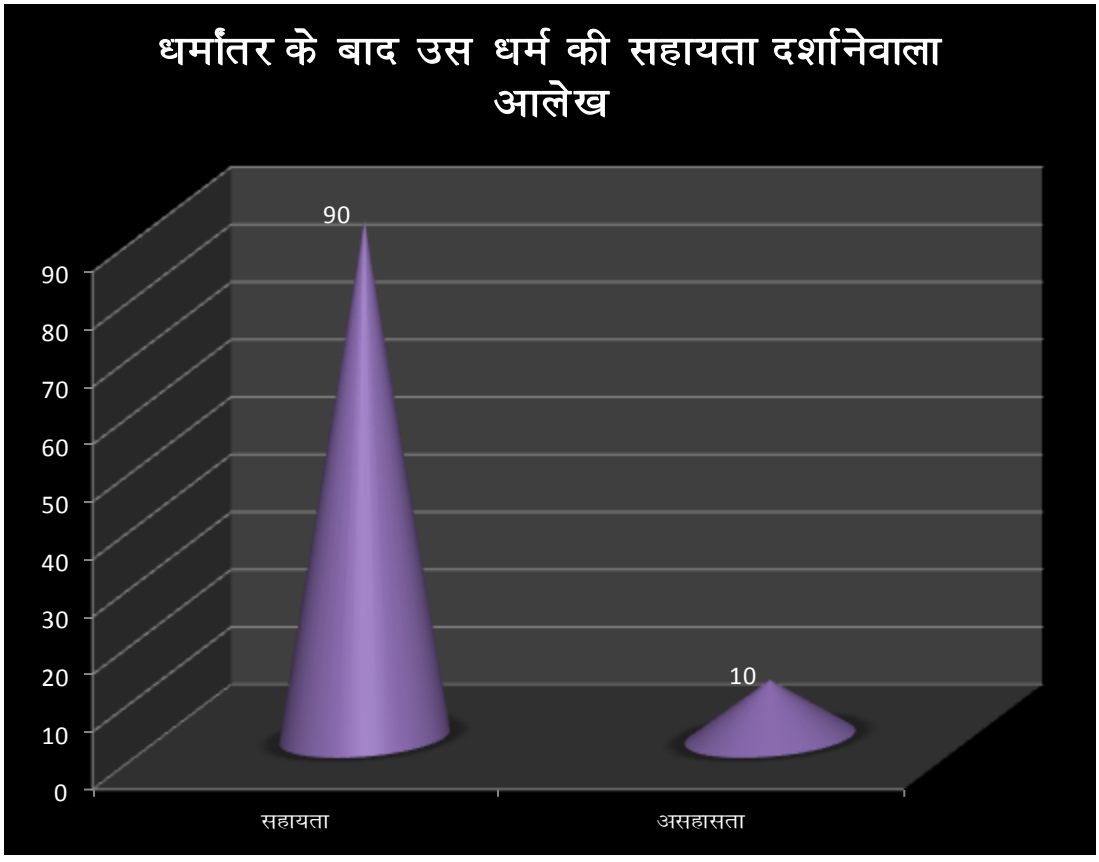

सारणी क्र. १८

आपके पुर्वज ने धर्मांतर किया था यह दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	०७	१४
२	नही	४३	८६
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, पुर्वज ने धर्मांतर किया था येसा कहने वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

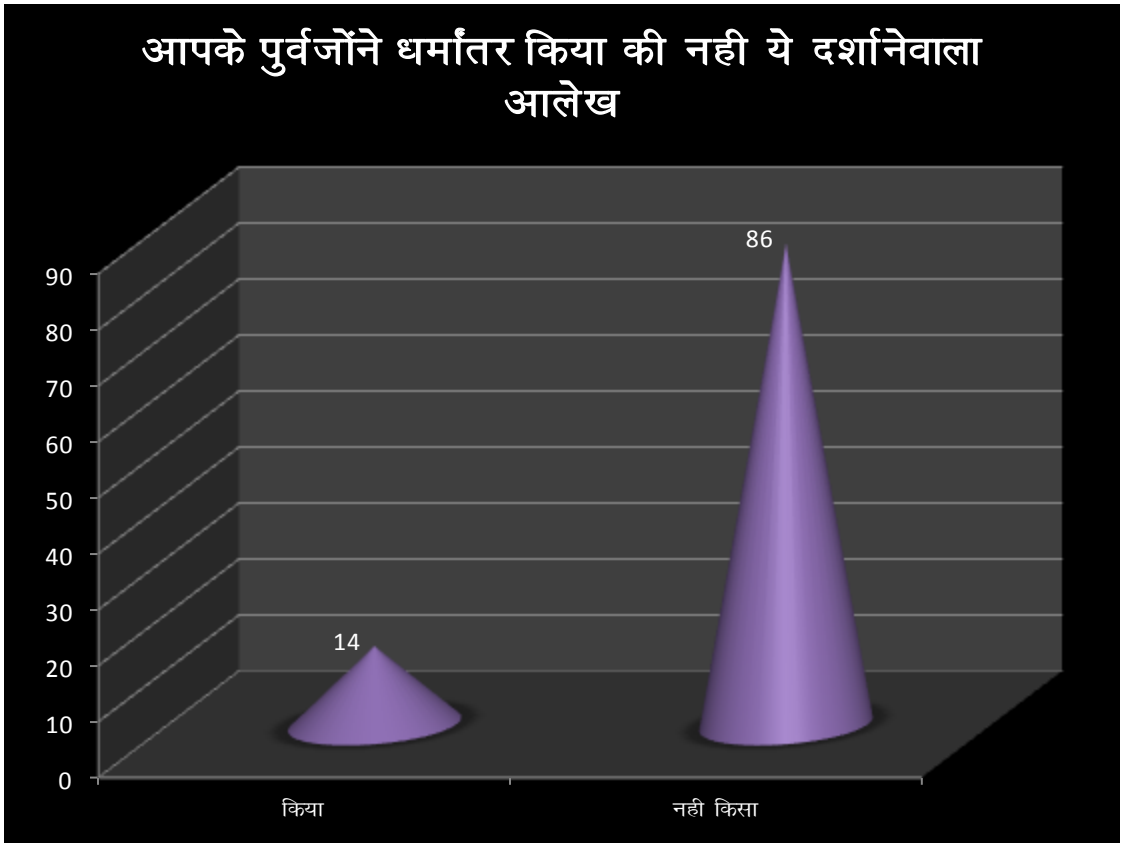

सारणी क्र. १६

धर्मांतर के बाद परिवार के सदस्योंका आपके प्रती बर्ताव दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	बुरा	१५	३०
२	अच्छा	३५	७०
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर के बाद परिवार के सदस्योंका बर्ताव अच्छा था ऐसे कहनेवाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

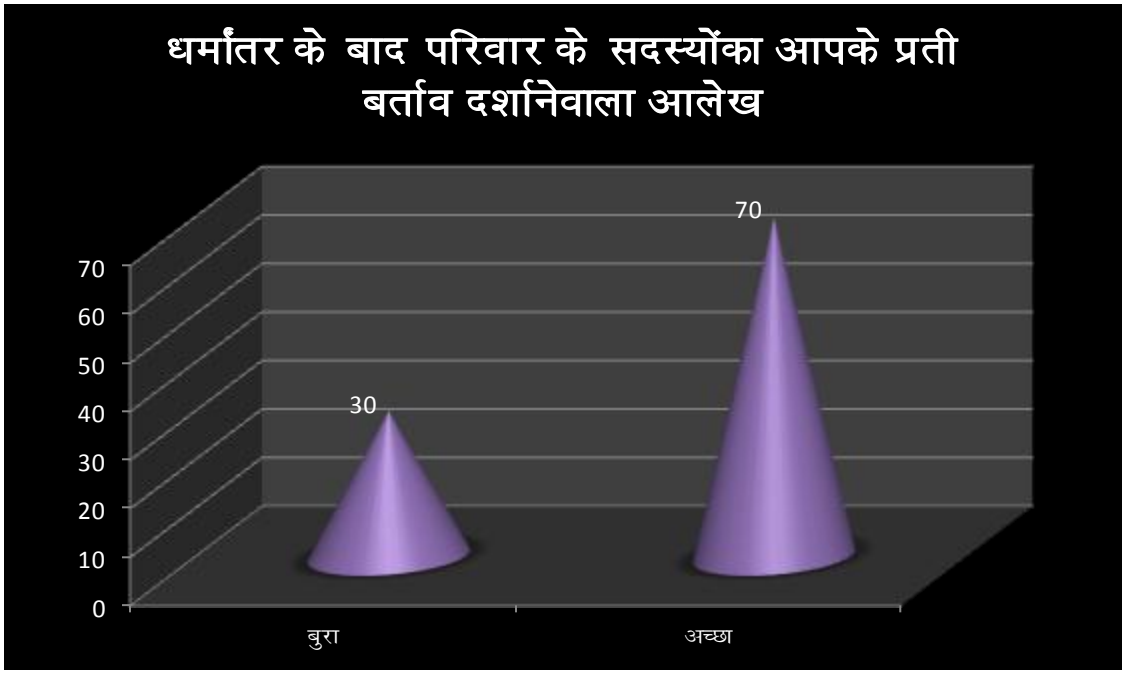

सारणी क्र. २०

धर्मांतर के बाद रहन-सहन मे बदलाव दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉ	४०	८०
२	नही	१०	२०
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर के बाद रहन सहन मे बदलाव पाने जाने वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

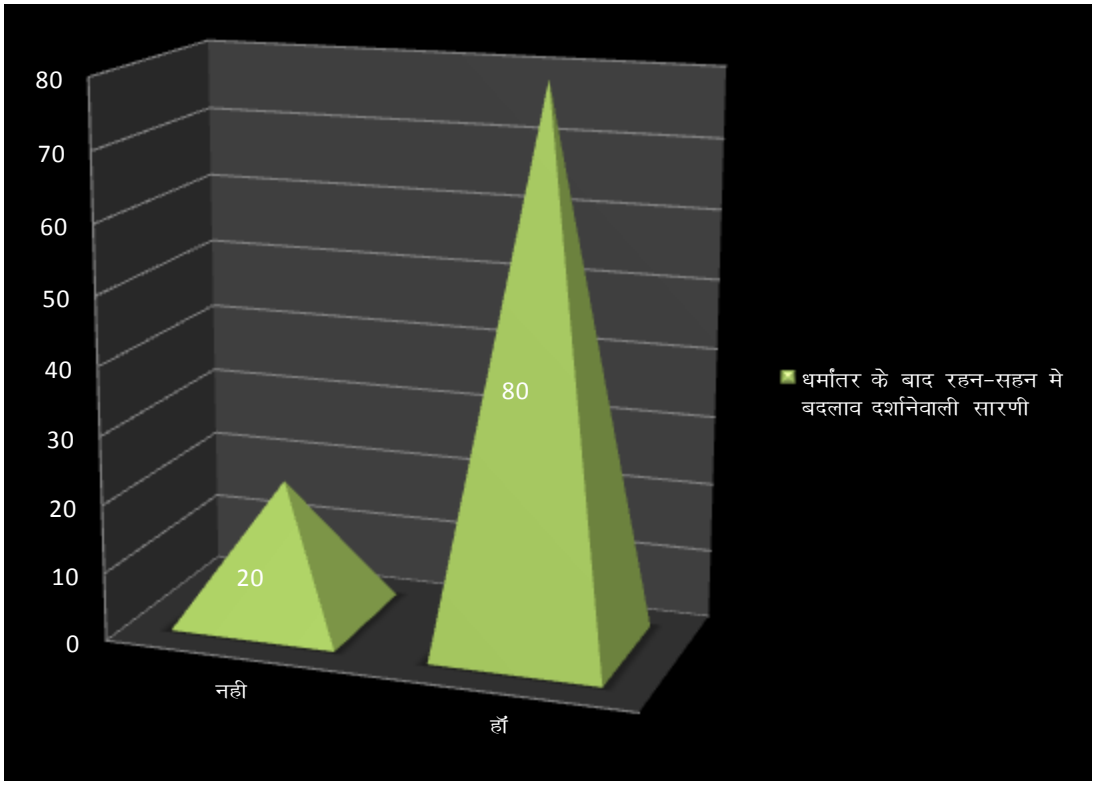

सारणी क्र. २१

धर्मांतरन के बाद रिस्तेदार भी इस धर्मकोअपनानें की इच्छा रखते है या नहीं दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	०८	१६
२	नही	४२	८४
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर के बाद नातेसंबंधी इस धर्म मे आने के इच्छुक नही वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

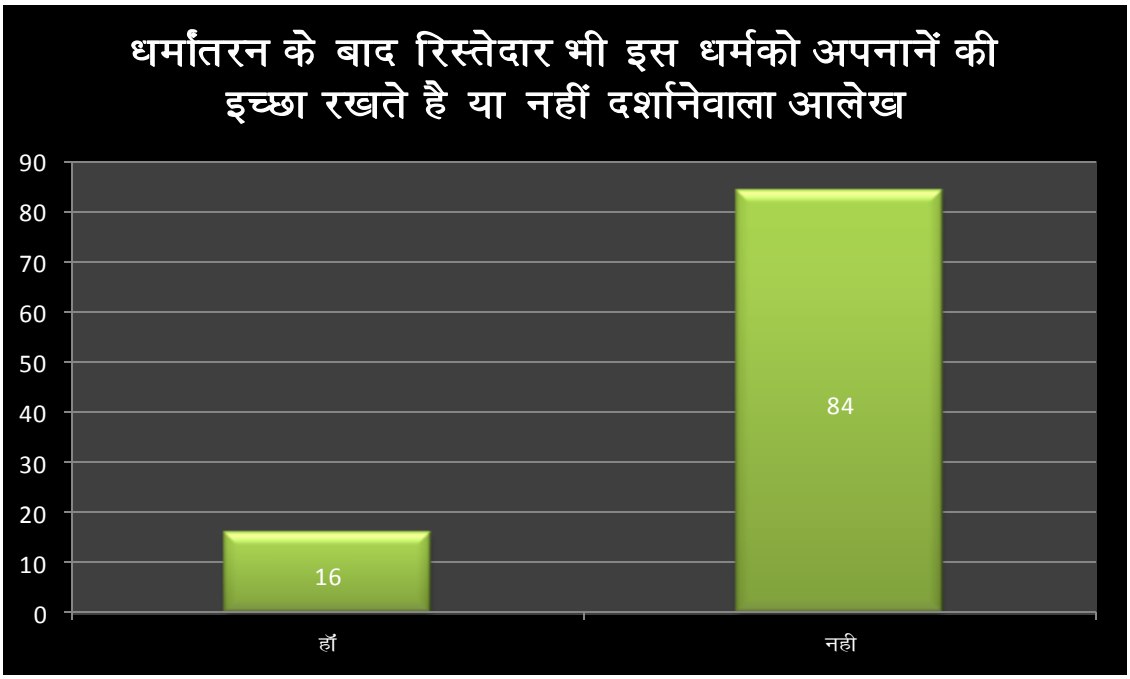

सारणी क्र. २२

धर्मांतर के बाद खान-पान मे बदलाव दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	४३	८६
२	नही	०७	१४
कूल योग		५०	१००

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर के बाद खाने पीने मे बदलाव होनेवाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

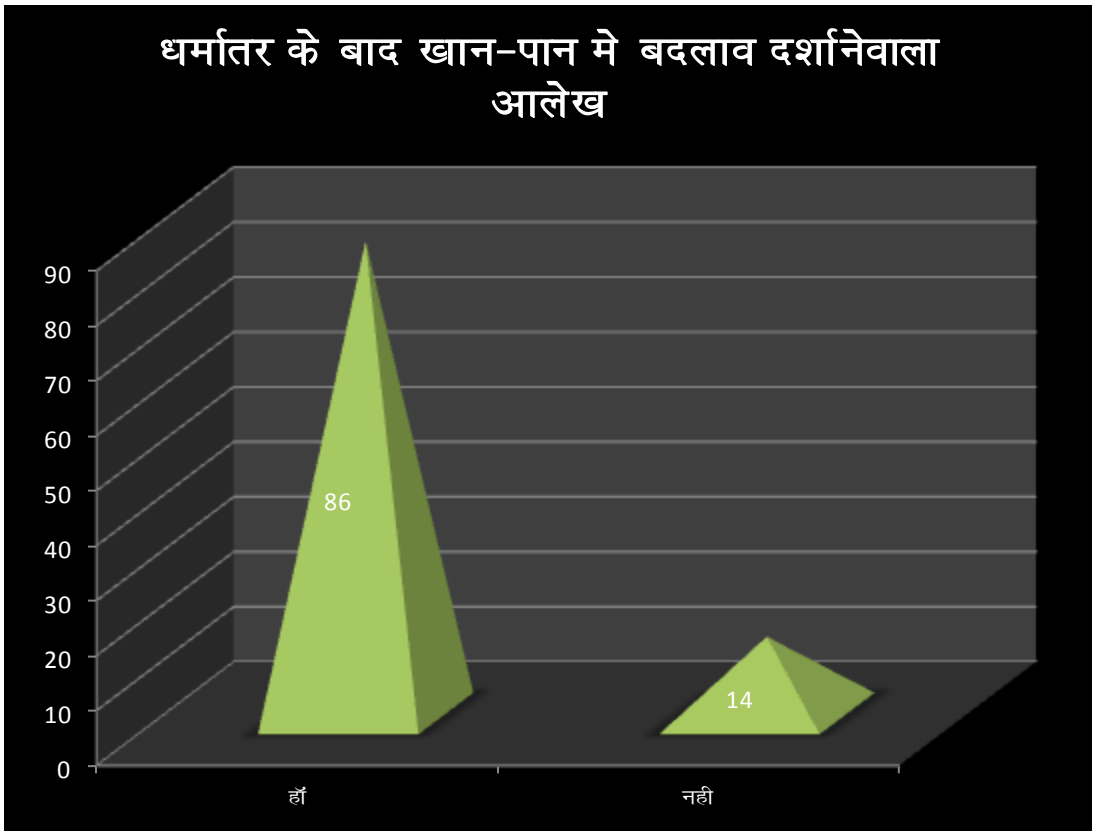

सारणी क्र. २३

धर्मांतर के लियेआपको किसीने प्रोत्साहीत किया यह दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	३७	७४
२	नही	१३	२६
कूल योग		५०	१००

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर के लिये प्रोत्साहीत किया ऐसा कहनेवाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

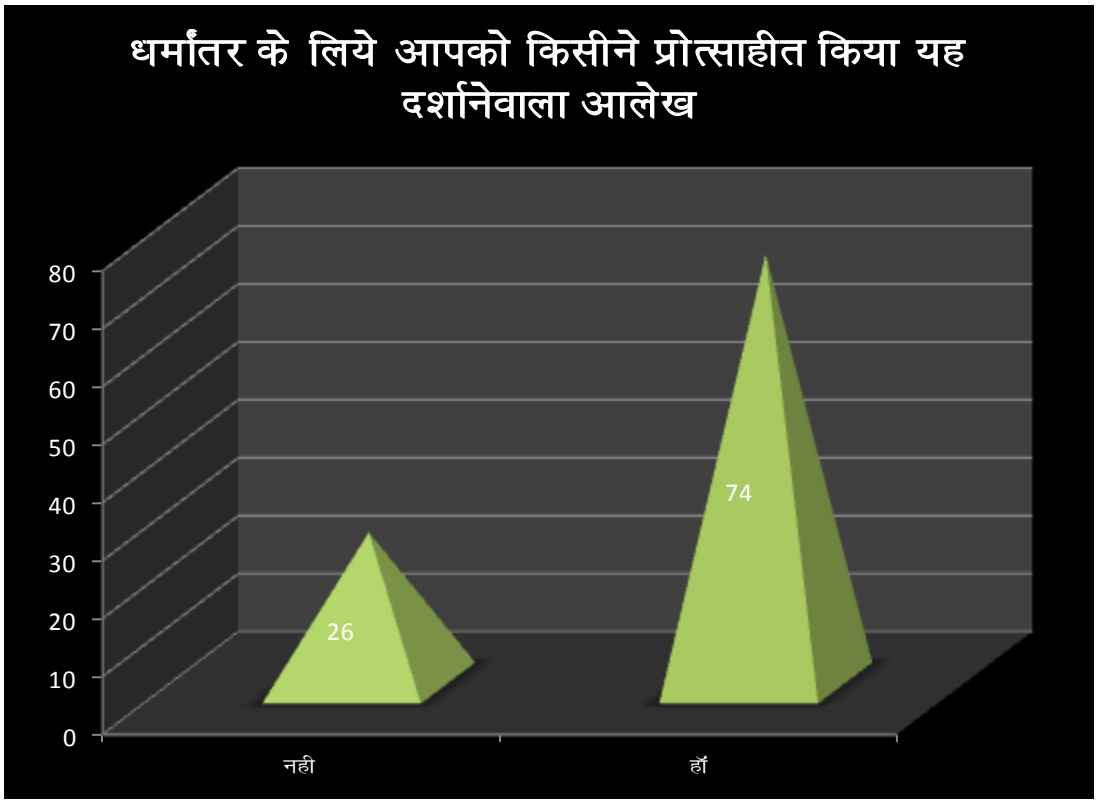

सारणी क्र. २४

आप चर्च मे जाते है या नही यह दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	४१	८२
२	नही	०९	१८
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर के बाद चर्च मे जानेवाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

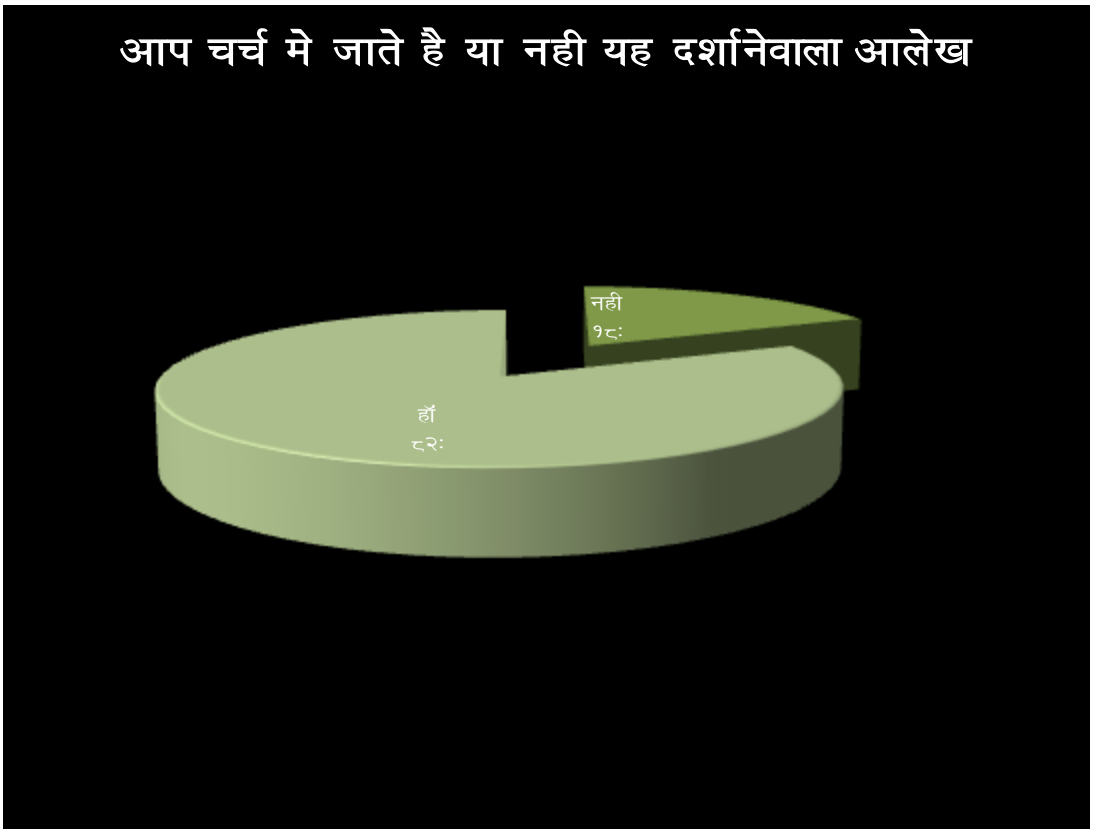

सारणी क्र. २५

धर्मांतर के बाद बच्चोंपर परिणाम दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	०८	१६
२	नही	४२	८४
कूल योग		५०	१००

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करने के बदा बच्चोंपर परिणाम हुवा येसे कहने वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

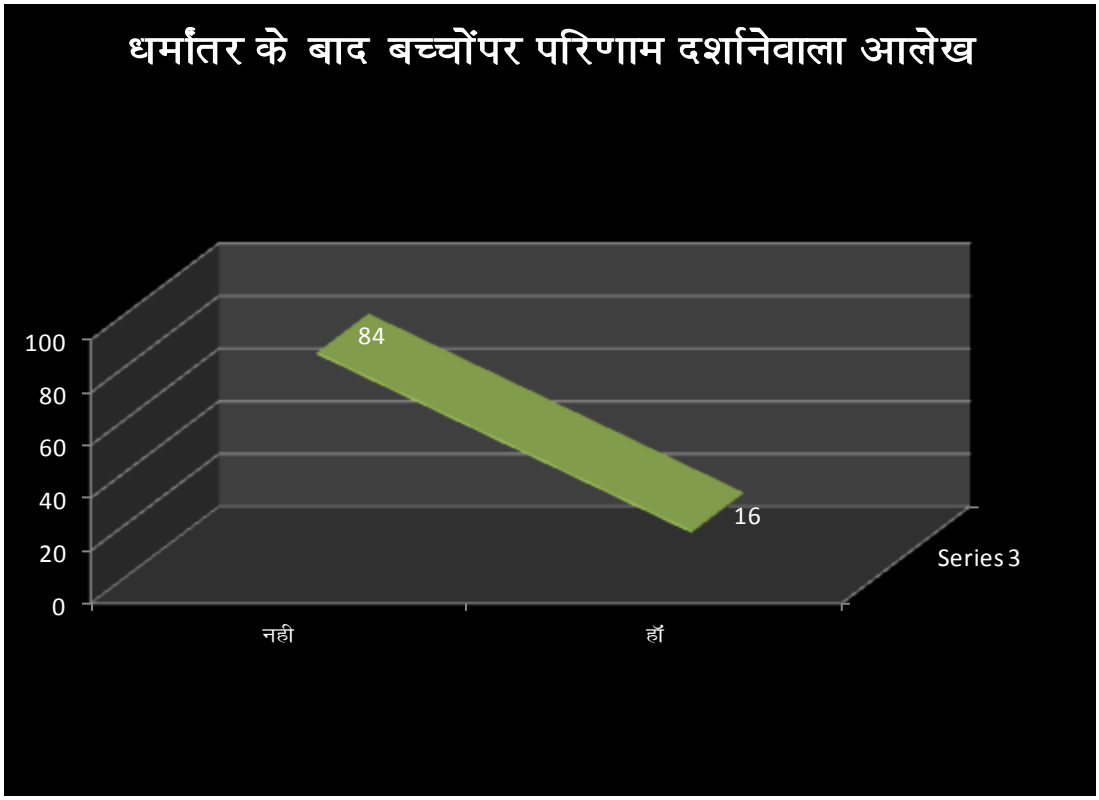

सारणी क्र. २६

धर्मांतर करने वाले धर्म के प्रती आपकी प्रतिक्रिया दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	अपनापन	२०	४०
२	आदरभाव	१२	२४
३	अन्य	१८	३६
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, धर्मांतर करनेवाले साधारन कुटुंब स्थिती वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

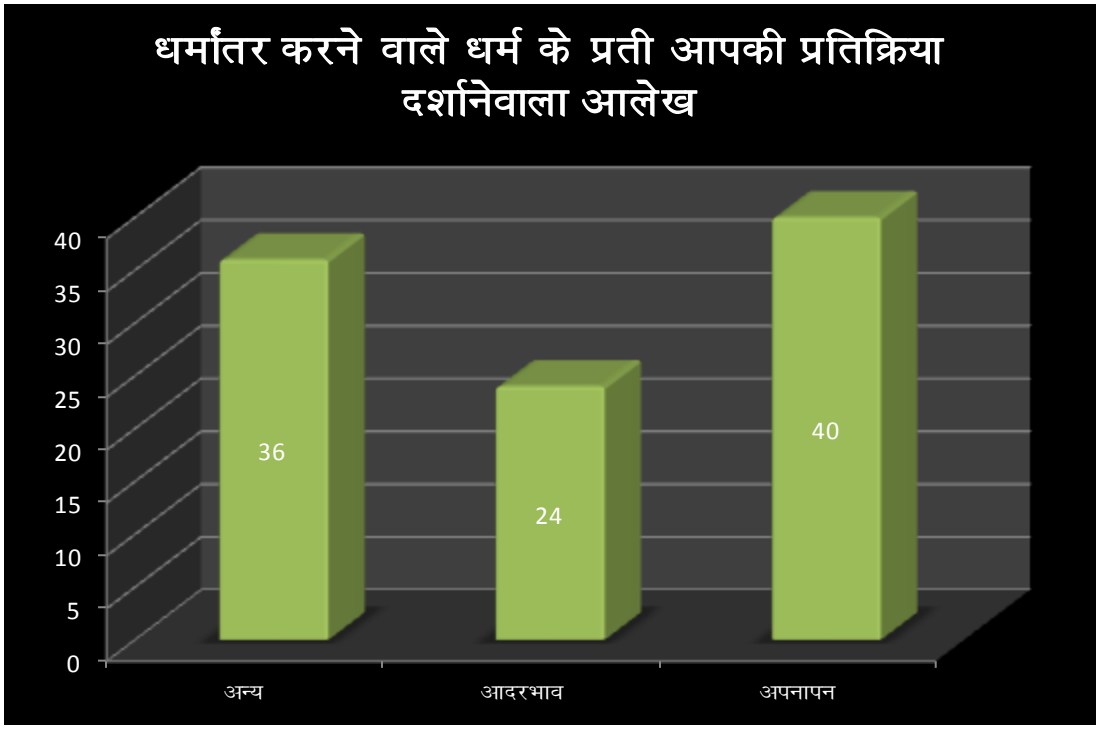

सारणी क्र. २७

दुसरोंको धर्मांतर के लिये प्रोत्साहित किया यह दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉ	०७	१४
२	नही	४३	८६
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसे ये निष्कर्ष निकलता है की, प्रोत्साहीत नही करने वाले उत्तरदाताओका प्रमाण ज्यादा है।

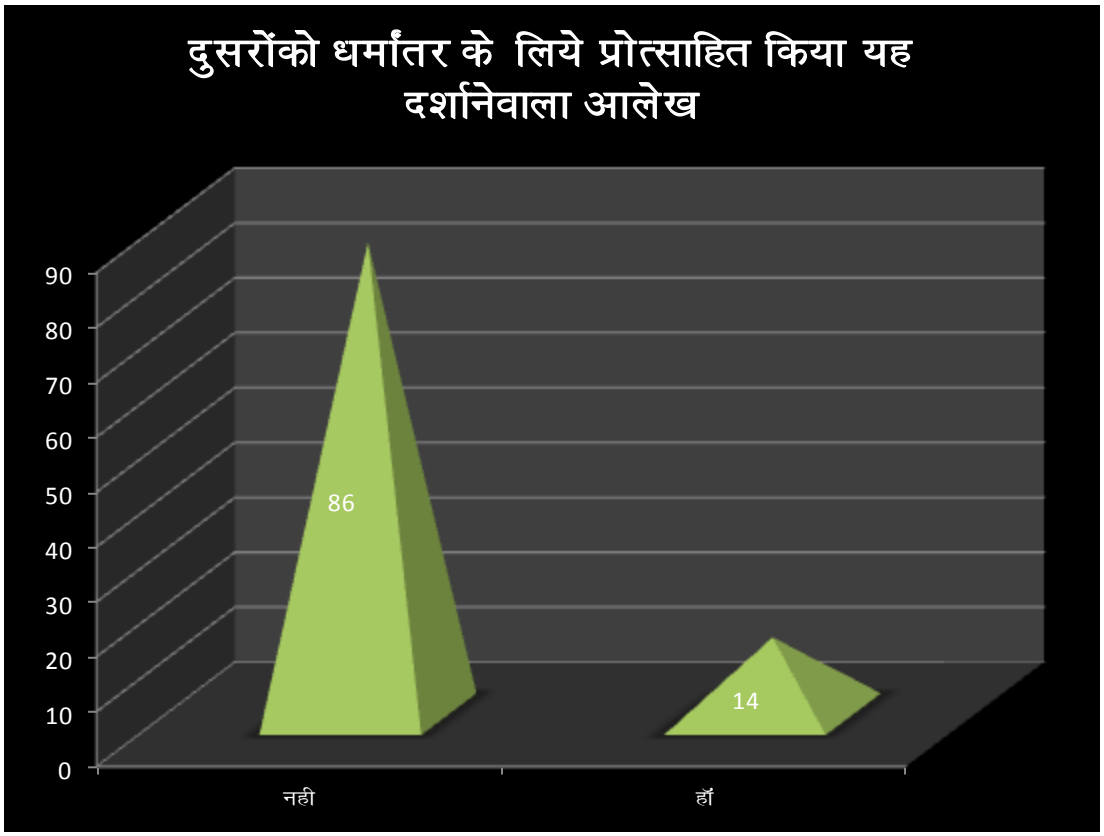

सारणी क्र. २८

चर्च में जाने के स्वभाव दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	अकेले	१७	३४
२	दोस्तोंके साथ	१२	२४
३	परिवार के साथ	१५	३०
४	अन्य	०६	१२
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसें यह निष्कर्ष निकलता है की, चर्च में अकेले जानेवाले उत्तरदाताओंका प्रमाण ज्यादा है।

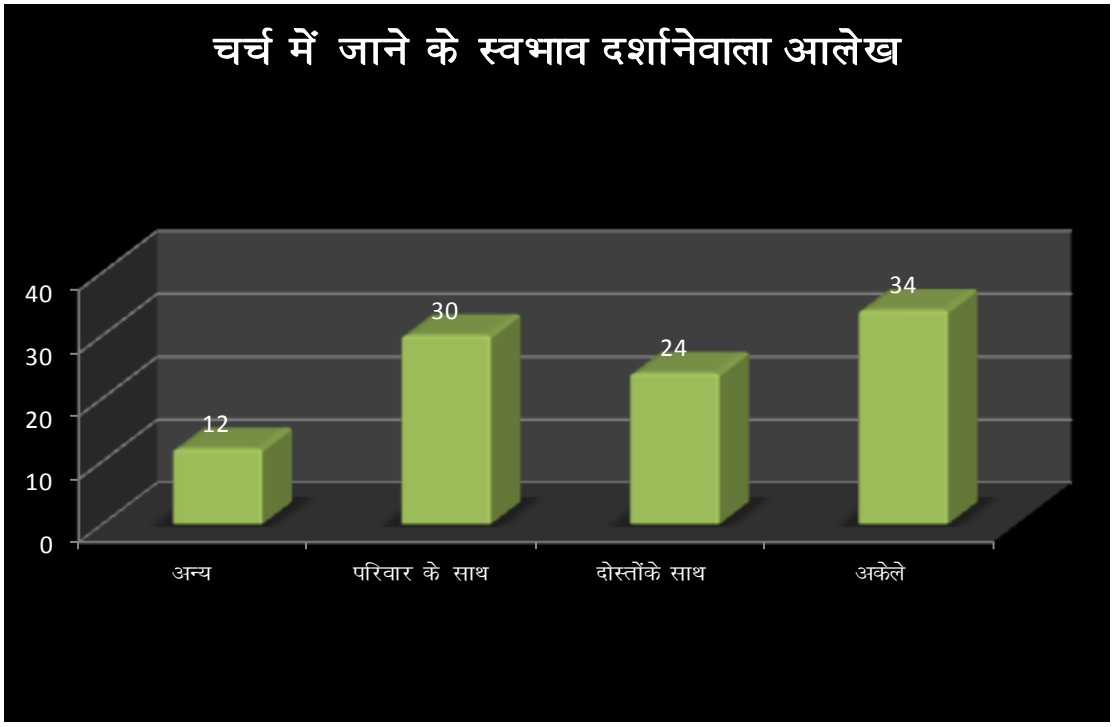

सारणी क्र. २६

चर्च में कब जाते हों यह दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	रोजाना	०६	१८
२	हर रविवार	१५	३०
३	वक्त मिलनें पर	१०	२०
४	महिनेमें एक बार	१६	३२
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसें यह निष्कर्ष निकलता है की, चर्च में महिनेंमें एक बार जानेवाले उत्तरदाताओंका प्रमाण ज्यादा है।

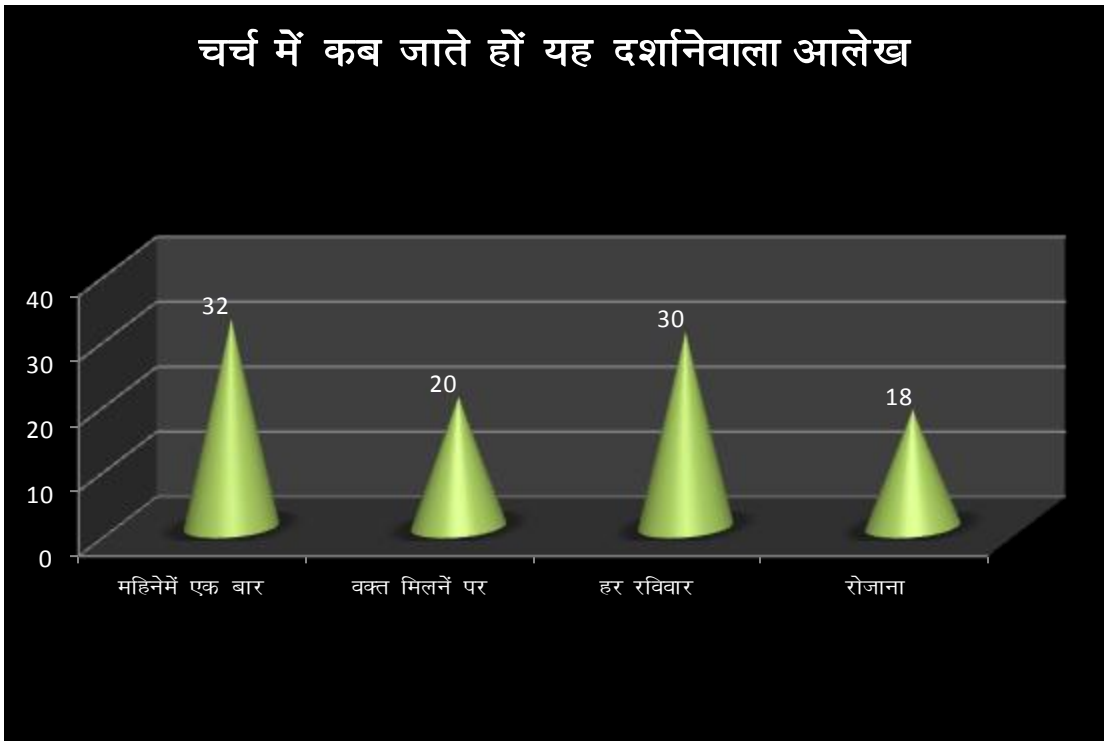

सारणी क्र. ३०

धर्म के प्रती प्रेरित करनेवाले व्यक्ती को दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	रिश्तेदार	०२	०४
२	धर्मगुरु	३०	६०
३	धर्मधारीत व्यक्ती	०५	१०
४	अन्य	१३	२६
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसें यह निष्कर्ष निकलता है की, धर्म के प्रती धर्मगुरुद्वारा प्रेरित किये जानेवाले उत्तरदाताओंका प्रमाण ज्यादा है।

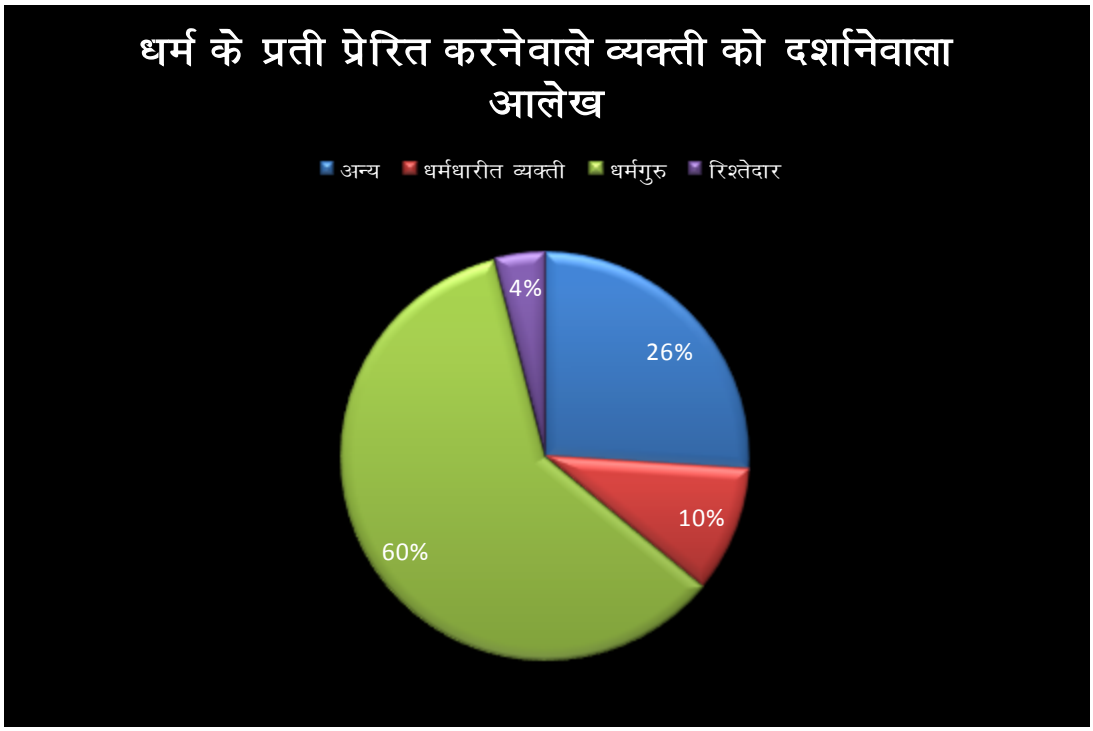

सारणी क्र. ३१

स्वइच्छासें धर्मधारन किया यह दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	हॉं	३७	७४
२	नही	१३	२६
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसें यह निष्कर्ष निकलता है की, धर्म स्वइच्छासें धारण किया यह बतानेवाले उत्तरदाताओंका प्रमाण सबसें ज्यादा है।

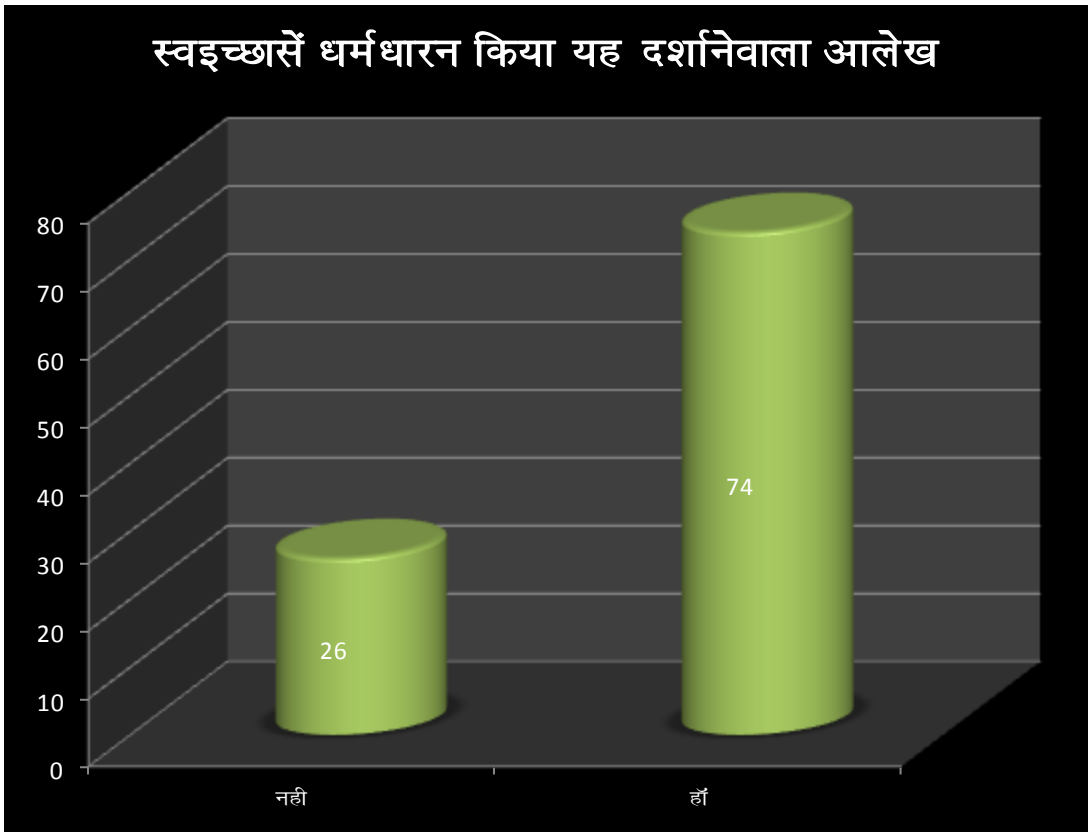

सारणी क्र. ३२

धर्मधारन करते वक्त निर्माण हुई समस्या दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	पारिवारीक	१०	२०
२	सामाजिक	२२	४४
३	धार्मिक	१४	२८
३	आर्थिक	०४	०८
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसें यह निष्कर्ष निकलता है की, धर्म धारण करते वक्त सबसे ज्यादा सामाजिक समस्याऐं निर्माण हुई यह बतानेवाले उत्तरदाताओंका प्रमाण ज्यादा है।

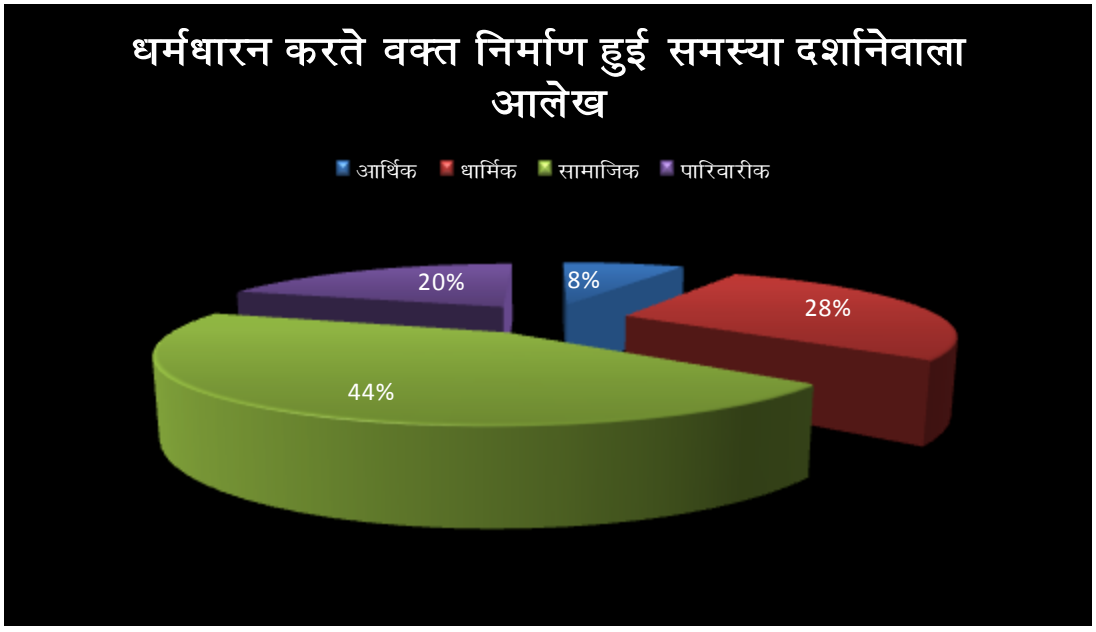

सारणी क्र. ३३

धर्मधारीत व्यक्तीका ब्यापार दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	खेत मजदुर	२५	५०
२	खेती	१०	२०
३	ब्यापारी	१०	२०
३	नोकरी	०५	१०
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसें यह निष्कर्ष निकलता है की, धर्मधारीत व्यक्तीयोमें खेत मजदुरोंकी संख्या सबसे अधिक है।

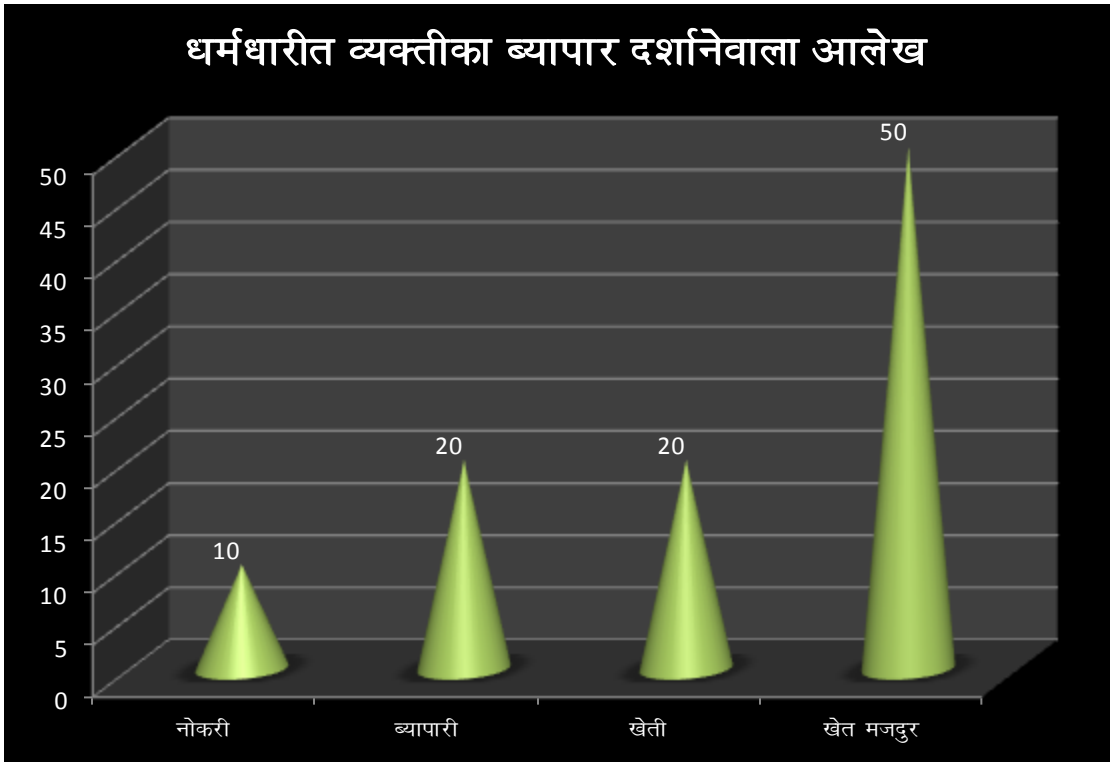

सारणी क्र. ३४

धर्मधारीत व्यक्तीकी सामाजिक स्थिती दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	उच्च	०९	१८
२	साधारण	२७	५४
३	निम्न	१४	२८
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसें यह निष्कर्ष निकलता है की, धर्मधारीत व्यक्तीकी सामाजिक स्थिती साधारण हैं यह बतानेवाले उत्तरदाताओंका प्रमाण ज्यादा है।

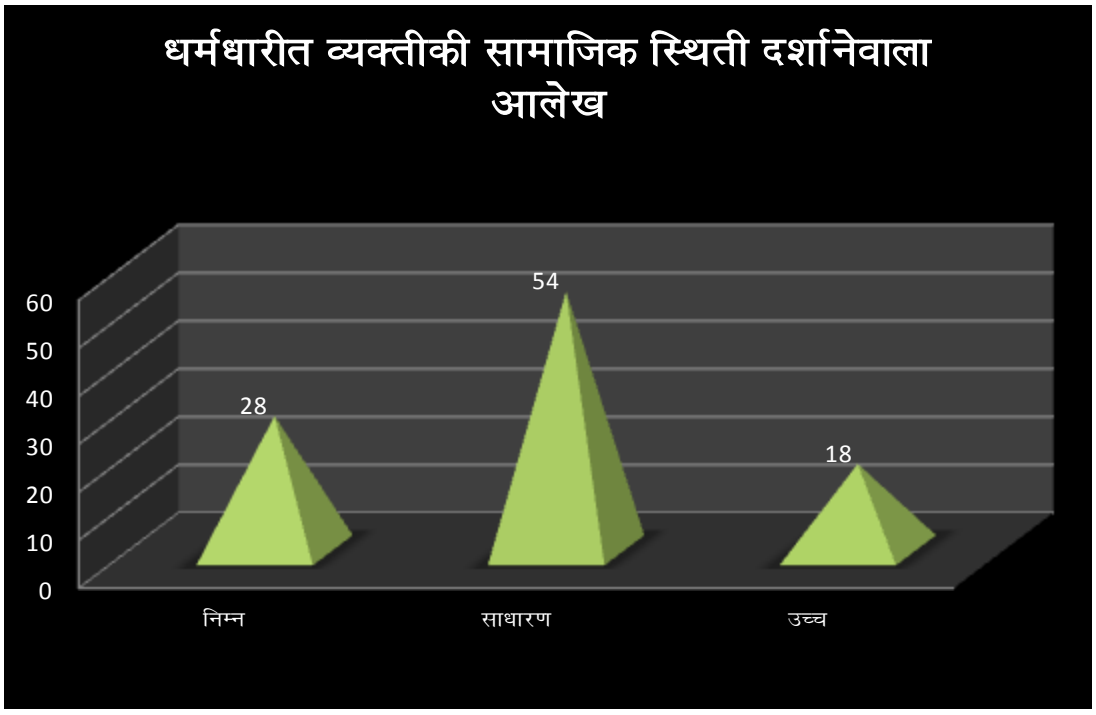

सारणी क्र.३५

धर्मधारीत व्यक्तीकी पारिवारीक स्थिती दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	उच्च	२५	५०
२	साधारण	१५	३०
३	निम्न	१०	२०
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसें यह निष्कर्ष निकलता है की, धर्मधारीत व्यक्तीकी पारिवारीक स्थिती उच्च हैं यह बतानेवाले उत्तरदाताओंका प्रमाण ज्यादा है।

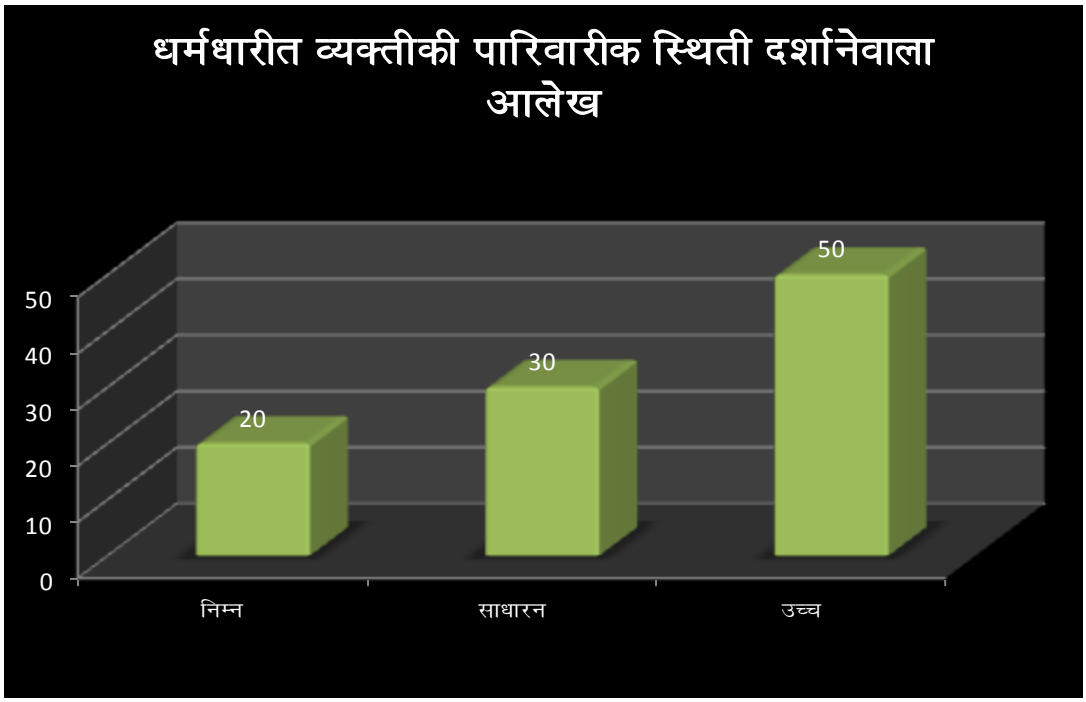

सारणी क्र.३६

धर्मधारीत व्यक्तीकी आर्थिक स्थिती दर्शानेवाली सारणी

अ.क्र.	विवरन	वारंवारीता	प्रतिशतवारी
१	उच्च	१५	३०
२	साधारण	२७	५४
३	निम्न	०८	१६
कूल योग		**५०**	**१००**

उपरोक्त सारणीसें यह निष्कर्ष निकलता है की, धर्मधारीत व्यक्तीकी आर्थिक स्थिती साधारण हैं यह बतानेवाले उत्तरदाताओंका प्रमाण ज्यादा है।

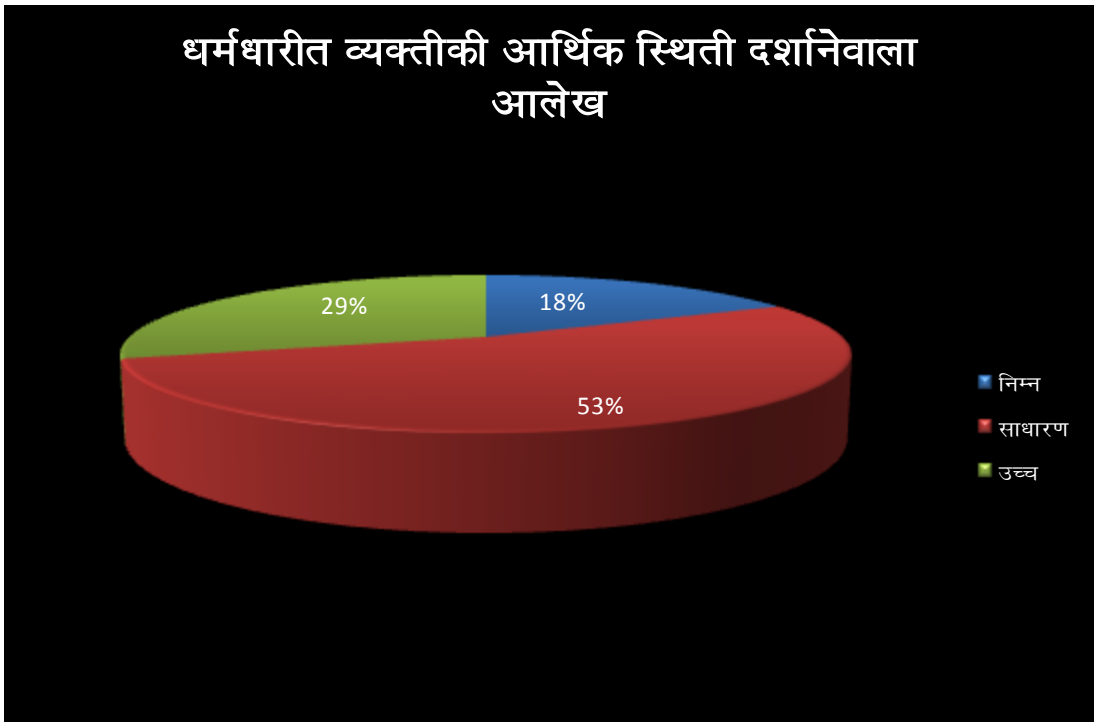

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष :-

मैंने अपने शोध कार्य के लिए **''ईसाई धर्म धारन करनेवाले व्यक्तियों की पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती : एक अध्ययन''** (विशेष संदर्भ : वर्धा तहसिल, जिला वर्धा, महाराष्ट्र) इस विषय का चुनाव किया है। इस विषय के अध्ययन हेतु चुनाव क्षेत्र महाराष्ट्र के वर्धा जिले की वर्धा तहसिल का चुनाव किया है। वर्धा तहसिल की यह विशेषता है की, यह तहसिल भी है तथा जिला भी है। इस वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत उत्तरदाताओंसे तथ्यों का संग्रह किया है। इस अध्ययन से वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत लोगों पर धर्मांतरन का कितना प्रभाव पडा तथा उनका पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती कैसी है इसका पता चलता है। ईसाई धर्मांतरन के बाद धर्मांतरीत लोगों की सामाजिक स्थिती यह शोध जो वर्धा तहसिल के संदर्भ में किया गया है इस विषय पर अध्ययन न के बराबर ही है। अतः यह अध्ययन प्रासंगिक एवं महत्वपुर्ण हो गया है।

मैंने अपने अध्ययन के आधारपर वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत उत्तरदाताओंसे तथ्यों का संग्रह कीया है। तथ्यों के विश्लेषन को इस शोध प्रबंध के क्रमानुसार विभिन्न पॉंच अध्यायों में प्रस्तुत किया है। इस विशिष्ट आयाम का विशद वर्णन इस विशेष अध्याय में दिया गया है।

प्रथम अध्याय शोध विषय का परिचय इसमें शोध विषय की प्रस्तावना, साहित्य का पुनरावलोकन, शोध का उददेश, परिकल्पना, शोध प्रविधी, अध्यायीकरण, अनुसुची तथा संदर्भ ग्रंथ सुची के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। इसमें बताया गया है की परिवर्तन प्रकृति का नियम है तथा ईसाई धर्मांतरण के बाद वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत लोगों की पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती में सुधार आया है।

अध्याय द्वितीय में 'धर्म का समाजशास्त्रीय अर्थ एवं परिभाषा' के संदर्भ में विस्तृत वर्णन किया गया है। धर्म का अर्थ, धर्मांतरन का अर्थ, धर्मांतरण की क्रांती, धर्म एवं समाज की एकात्मता, धर्मांतरण को बढावा देने वाली घटनाऐं इन विषयों को ध्यान में रखते हुऐ समाजशास्त्रीय दृष्टीकोन को महत्वपूर्ण मानते हुऐ समाविष्ट किया गया है। समाविष्ट

विषयोंसे धर्मांतरीत व्यक्तियों के सामाजिक एवं पारिवारीक मुल्यों का विशेष संदर्भ धार्मिक तौर पर जाना जा सकता है।

अध्याय तृतिय में 'ईसाई मिशनोंकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' में ईसाई मिशनरीयों का संक्षिप्त परीचय, ईसाई मिशनरीयों की ऐतिहासीक पृष्टभुमि, उनकी विशेषताऐं, धर्मांतरण के संदर्भ में उनके द्वारा किया गया कार्य तथा अन्य धर्मोका एवं लोगों का उनके तरफ आकर्षित होने के कारणों का विशेष संदर्भ दिया गया है। इसी अध्याय में धर्मांतरण के बाद मिलने वाले सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है।

अध्याय चतुर्थ में 'वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत व्यक्तियों का वैयक्तिक अध्ययन' किया गया है। इसमें ईसाई धर्मांतरन के बाद वर्धा तहसिल के धर्मांतरीत लोगों की सामाजिक, पारिवारीक एवं आर्थिक स्थिती कैसी है इसका विवेचन किया गया है। इसका विस्तृत अध्ययन करने हेतु इसमें वर्धा तहसिल के ५० ईसाई धर्मांतरीत लोगों को उत्तरदाताओं के रुप में शामिल किया गया है।

ईसाई धर्मातरण के बाद वर्धा तहसिल के ईसाई धर्मांतरीत लोगों की सामाजिक स्थिती कैसी है, इसका अध्ययन करने हेतु ५० प्रतिशत उत्तरदाताओं का साक्षात्कार लिया गया है। जिनको आयु के

आधार पर वर्गीकरन करने से स्पष्ट होता है की सबसे अधिक ५० उत्तरदाताओ मे १८ से ३० उम्र के १० प्रतिशत उत्तरदाता है तो ३१ से ४३ के ४० प्रतिशत उत्तरदाता है, ४४ से ५६ के ३६ प्रतिशत और ५७ से ज्यादा १४ प्रतिशत उत्तरदाता है। इससे ऐसा निष्कर्ष निकलता है की, ३१ से ४३ उम्र के उत्तरदाताओंका प्रमाण ज्यादा है। यह युवा वर्ग काफी उर्जावान एवं उधमी होते है जो बदलते परिवेश में अनुगामी होकर उस परिवेश के अनुकुल तीव्रता के साथ आत्मसात हो जाते है। फलतः उनके व्यवहार, मनोवृत्ती और विचारोंमें परिवर्तन परिलक्षीत होने लगता है।

ईसाई धर्मांतरीत व्यक्तियों की आर्थिक स्थिती सुधारने में ईसाई मिशनरीयोंद्वारा किया गया धर्मांतरण मिल का पत्थर साबित हुआ है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर हम यह कह सकते है की, इन ईसाई धर्मांतरीत उत्तरदाताओंकी आर्थिक स्थिती उनके आय के स्त्रोत पर निर्भर है। इनके आय के स्त्रोंत अलग-अलग है। उत्तरदाताओंमें २५,००० से ३५,००० तक वार्षिक आय प्राप्त करणेवाले उत्तरदाताओं का प्रमाण ६० प्रतिशत, ३६,००० से ४६,००० तक वार्षिक आय प्राप्त करणेवाले उत्तरदाताओं का प्रमाण १८ प्रतिशत, ४७,००० से ५८,००० तक वार्षिक आय प्राप्त करणेवाले उत्तरदाताओं का प्रमाण १६ प्रतिशत,

और ५८,००० से ज्यादा वार्षिक आय प्राप्त करणेवाले उत्तरदाताओं का प्रमाण ०६ प्रतिशत है। इससे यह स्पष्ट होता है की, ईसाई धर्मांतरन के बाद धर्मांतरीत व्यक्तियोंकी आर्थिक स्थिती में सुधार आया है। जिससे उनको समाज में एक अच्छा स्थान मिला है।

सुझाव :-

१. ईसाई धर्मांतरीत व्यक्तियोंके सामाजिक स्थिती में सुधार के लिऐ समाज में जो कुछ मात्रा में अंधश्रध्दा है उसके प्रती जागरुकता पैदा कर इसे जड सें खत्म करना होगा।

२. ईसाई धर्मांतरीत समाज के सामाजिक स्थिती में सुधार करने हेतु समाज के शिक्षीत लोगों ने सामने आकर समाज में बदलाव के लिए प्रयास करने होंगे।

३. ईसाई धर्मांतरीत लोगों ने अपने आर्थिक स्थिती में सुधार करने हेतु आधुनिक व्यवसाय, आधुनिक तंत्रज्ञान तथा उच्च शिक्षा पाकर अच्छी नोकरी प्राप्त करनी होगी।

४. ईसाई धर्मांतरीत लोगो की शैक्षणिक स्थिती सुधारनी हेतु ईसाई समाज के ही जिनकी आर्थिक स्थिती अच्छी है, ऐसे लोगों ने

शिक्षा क्षेत्र में जाकर शिक्षा संस्था खोलनी चाहिऐ तथा उनमें धर्मांतरीत बच्चो को कम पैसो में प्रवेश देना चाहिऐ।

५. ईसाई धर्मांतरीत लोगों के पारिवारीक स्थिती सुधार हेतु उनके बच्चों ने अंग्रेजी शिक्षापर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

६. ईसाई धर्मांतरीत लोगों ने ईसाई धर्म के सम्मान के लिए ईसाई त्यौहारों को बढे धुम-धाम से मनाना चाहिए जिससे की धर्म प्रसार तथा प्रचार का कार्यों को प्रेरणा मिलती है।

७. पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती में एक समान बदलाव अतः सुधार हेतु धर्मांतरन के प्रती जागरुकता लाना जरुरी है।

इस प्रकार यदी उपर्युक्त सुझावों पर ध्यान दिया जाये तो ईसाई धर्मांतरीत लोगों के सामाजिक, पारिवारीक एवं आर्थिक स्थिती में और भी परिवर्तन आ सकता है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

(डॉ. बाबा साहब अंबेडकर दलित एवं जनजाति अध्ययन संस्कृति विद्यापीठ)

लघु शोध प्रबंध – ईसाई धर्म धारन करनेवाले व्यक्तीयों के पारिवारीक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिती के बारें में ...

<u>प्रश्नावली</u>

शोध कर्ता :- संदिप एस. शंभरकर

सामान्य जानकारी :-

उत्तरदाता का नाम ..... पिता का नाम .....

उम्र ..... लिंग ..... व्यवसाय ..... शिक्षा .....

वैवाहिक स्थिती ..... परिवार में सदस्यों की संख्या .....

ग्राम ..... वि.खं. ..... तहसील ..... जिला .....

१. आपका धर्मांतरन से पहले कौन सा धर्म था?

हिंदू ( ) बौध्द ( )

आदीवासी ( ) मुस्लीम ( )

२. आपका धर्मांतरन से पहले कौन सा जाती वर्ग था?

एस.सी ( ) एस.टी. ( )

व्हि.जे.एन.टी. ( ) ओ.बी.सी./एस.बी.सी. ( )

अन्य ( )

३. आपके परिवार में सदस्य की संख्या कितनी है?

१ से ३ ( ) ४ से ६ ( )

७ से ज्यादा ( )

४. आपके परिवार का प्रकार कौन सा है?

विभक्त ( ) संयुक्त ( )

५. आपकी शैक्षणिक स्थिती कैसी है?

साधारन ( ) अच्छा ( )

उच्च ( ) इनमेंसे नही ( )

६. आपके परिवार का दर्जा कैसा है?

साधारन ( ) अच्छा ( )

उच्च ( )

७. आपकी सालाना आमदनी कितनी है?

२५००० से ३५००० ( ) ३६००० से ४६००० ( )

४७००० से ४७००० ( ) ५८००० से ज्यादा ( )

८. आपने ईसाई धर्म कब धारन किया ?

१ से २ साल पहले ( ) ३ से ४ साल पहले ( )

५ से ६ साल पहले ( ) ७ साल पहले ( )

९. आपको धर्मांतर करते समय समस्या निर्माण हुई थी?

हॉं ( ) नही ( )

१०. आपके सामने धर्म धारण करने के बाद समस्या निर्माण हुई थी?

हॉं ( ) नही ( )

११. आपको धर्मांतर के बाद समान दर्जा मिला?

हॉं ( ) नही ( )

१२. आपको धर्मांतर के बाद आर्थिक सुख कौन सा मिला?

अच्छी नौकरी मिली ( ) आर्थिक अडचन दुर हुई ( )

अन्य व्यापर करनेको मिला ( ) इनमेंसे नही ( )

१३. आप धर्मांतर के बाद उस धर्म की पुजा-पाठ करते हो?

हॉं ( ) नही ( )

१४. आपको धर्मांतर के बाद उस धर्म से सहायता मिली?

हॉं ( ) नही ( )

१५. आपके पुर्वज ने धर्मांतर किया था ?

हॉं ( ) नही ( )

१६. धर्मांतर के बाद परिवार के सदस्योंका आपके प्रती बर्ताव अच्छा है?

हॉं ( ) नही ( )

१७. आपके धर्मांतर के बाद रहन-सहन मे बदलाव आया?

हॉं ( ) नही ( )

१८. धर्मांतरन के बाद रिस्तेदार भी इस धर्मको अपनानें की इच्छा रखते है ?

हॉं ( ) नही ( )

१९. धर्मातर के बाद आपके खान-पान मे बदलाव हुआ?

हॉं ( ) नही ( )

२०. धर्मांतर के लिये आपको किसीने प्रोत्साहीत किया ?

हॉं ( ) नही ( )

२१. आप चर्च मे जाते है ?

हॉं ( ) नही ( )

२२. धर्मांतर के बाद आपके बच्चोंपर परिणाम अच्छा है?

हॉं ( ) नही ( )

२३. धर्मांतर करने वाले धर्म के प्रती आपकी प्रतिक्रिया कैसी है?

अपनापन ( ) सम्मानजनक ( )

अन्य ( )

२४. आपने दुसरोंको धर्मांतर के लिये प्रोत्साहित किया ?

हॉं ( ) नही ( )

२५. आप चर्च में किसके साथ जाते हो?

अकेले ( ) दोस्तोंके साथ ( )

परिवार के साथ ( ) अन्य ( )

२६. आप चर्च में कब जाते हों?

रोजाना ( ) हर रविवार ( )

वक्त मिलनें पर ( ) महिनेमें एक बार ( )

२७. आप धर्मांतरन के लिये किसके द्वारा प्रेरित हुऐं?

रिश्तेदार ( ) धर्मगुरु ( )

धर्मधारीत व्यक्ती ( ) अन्य ( )

२८. आपनें स्वइच्छासें धर्मधारन किया ?

हॉं ( ) नही ( )

२९. आपको धर्मधारन करते वक्त कौन सी समस्या निर्माण हुई?

पारिवारीक ( ) सामाजिक ( )

धार्मिक ( ) आर्थिक ( )

३०. आपका आमदनी का माध्यम कौन सा है?

खेत मजदुर ( ) खेती ( )

ब्यापारी ( ) नोकरी ( )

३१. आपकी सामाजिक स्थिती कैसी है?

उच्च ( ) साधारण ( )

निम्न ( )

३२. आपकी पारिवारीक स्थिती कैसी है?

उच्च ( ) साधारण ( )

निम्न ( )

३३. आपकी आर्थिक स्थिती कैसी है?

उच्च ( ) साधारण ( )

निम्न ( )

संदर्भ ग्रंथ सुची

१. डॉ. जाटव डि. आर., राज्य और अल्पसंख्यक

२. डॉ. जाटव डि. आर., विश्व धर्म और अम्बेडकर

३. डॉ. जाटव डि. आर., डॉ. अम्बेडकर और भारतीय दर्शन कें समीक्षक

४. सामाजीक समाचार पत्रिका., आदिवासी सत्ता, मार्च २०१३

५. अम्बेडकर डॉ. बाबासाहेब., धर्मांतर का?

६. फादर फ्रासिंस दिबिटो., येशुचा यशाचा मार्ग

७. मंगळवाडी विशाल., धर्मांतरन

८. राज सुंदर., धर्मांतरन

९. जैन प्रकाशन., वर्धा जिला विशेष पुस्तिका, वर्धा.

१०. अप्रकाशित लेख : दलितोध्दार में ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान, गजभिए संजय, नागपूर.

११. *Varughese Suma.,* Christianity – Indian Christianity : In search of the Christ within.

१२. *Shirer Priscilla.,* The Resolution for Women

१३. *A Ministry of Christian Writing.,* The Light of Life :The Magazine for Christian Growth.

१४. *Abraham P.,* Issues And Concerns Of Christian Today

१५. **http://en.wikipedia.org/wiki/christianity_in_india.**

१६. **http://www.iclnet.org/pub/resources/christian-books.html**

Pointing the Way: A Guide to Christian Literature on the Internet